

GS-BHS/2C/4.00

श्री गुलाम नबी आज़ाद (क्रमागत) : नीचे ब्लॉक से लेकर, ग्रामसेवक से लेकर सिर्फ उसी पार्टी के आदमी को काम मिलेगा, उसी को रोजगार भी मिलेगा, उसी को ठेका भी मिलेगा, इतनी भयंकर बात आज तक इतिहास में न सुनी थी, न पढ़ी थी।

माननीय उपसभापति जी, यह सरकार हर बात पर कहती है कि हमारी सरकार गेम चेंजर है। यह गेम चेंजर नहीं है, यह नेम चेंजर है। जितनी भी योजनाएं हैं - मेरे पास बहुत बड़ी सूची है, लेकिन मैं 20-22 योजनाओं का ही नाम लूंगा। जितनी भी स्कीम्स हैं, जितनी भी योजनाएं हैं, जो 1985 के बाद कांग्रेस शासन में, यूपीए के शासन में बनी थीं, उनके नाम बदल दिए गए हैं। इसीलिए मैं कहता हूं कि यह गेम चेंजर नहीं है, नेम चेंजर है। इंदिरा आवास योजना, 1985 में बनी थी और एनडीए की सरकार आने के बाद यह प्रधान मंत्री ग्रामीण आवास योजना बन गई। राजीव आवास योजना 2009 में Centrally-sponsored Scheme बनी थी, अब यह Sardar Patel National Urban Housing Mission बन गयी। मैं आपत्ति नहीं जताता हूं कि इसमें किसका नाम आ गया, मैं खाली नाम बदलने की बात करता हूं। निर्मल भारत अभियान अब स्वच्छ भारत बन गया है। राजीव गांधी ग्रामीण विद्युतीकरण योजना को अब दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना बना दिया है। Basic Savings Account, 2005 में बन गया था, इसे अब जन-धन योजना बना दिया गया। National Project on Management of Soil Health and Fertility, यह योजना 20 08 में बनी थी, अब यह सॉयल हैल्थ कार्ड स्कीम बन गयी। Swavalamban Pension Scheme for Unorganized Sector, 2010 में बनी, अब यह

Uncorrected/ Not for Publication-05.02.2018

अटल पेंशन योजना बन गयी। हमने नेशनल स्किल डेवलपमेंट मिशन 2010 में बनाया था, अब यह स्किल इंडिया बन गया। JNNURM, 2005 में बना था, जब मैं इसका मंत्री था, यह अब AMRUT योजना बन गयी। Accelerated Irrigation Benefit Programme, 2007 में बना था, यह प्रधान मंत्री कृषि सिंचाई योजना बन गया। हमने राष्ट्रीय कृषि विकास योजना 2007 में बनाई थी, अब यह परम्परागत कृषि विकास योजना बन गयी। National Agriculture Insurance Scheme (NAIS), हमने 1985 में बनायी थी, अब यह प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना बन गयी। National Manufacturing Policy, 2011 में हमने बनायी, यह मेक इन इंडिया बन गयी। National Maritime Development Scheme, 2005 में बनी, अब यह सागरमाला बन गई। हमने Fortified Urea Policy, 2005 में बनायी, अब इसका हिन्दी में अनुवाद हो गया, तो नीम कोटेड यूरिया स्कीम बन गयी। जन औषधि स्कीम 2008 में बनी थी, तब भी दवाइयों की सैकड़ों, हजारों दुकानें खुली थीं, अब यह प्रधान मंत्री जन औषधि योजना बन गयी। अब इसका नाम बदल गया, तो यह नई योजना हो गई। जैसे भारत का नाम old Bharat से अब new Bharat हो गया है, यह new India हो गया। आपने भारत को भी नहीं छोड़ा। National Governance Plan, 2006 में बना, तो अब यह Digital India बन गया। Universal Immunization Programme 1985 में बना, तो अब यह इंद्रधनुष बन गया। National Optical Fibre Network 2011 में हमने बनाया, अब यह Bharat Net बन गया। National Rural Livelihood Mission 2005 में बना था, यह दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण औषधि योजना बन गयी। National Direct Benefit

Transfer 2013 में बना, अब यह पहल बन गया। National Girl Child Day Programme 2008 में बना था, अब यह बेटा बचाओ, बेटा पढ़ाओ बन गया। इंदिरा गांधी मातृत्व सहयोग योजना 2010 में बनी थी, अब यह प्रधान मंत्री मातृ वंदना योजना बन गई।

(HMS/2D पर जारी)

RL-HMS/2D/4.05

श्री गुलाम नबी आज़ाद (क्रमागत) : ये इतनी स्कीम्स हमारी ही हैं, तो नई स्कीम्स कहाँ हैं? माननीय प्रधान मंत्री जी को याद होगा, मैंने वर्ष 2014 या 2015 में बताया था कि अगर पूरे 5 साल भी आप और आपका मंत्रिमण्डल 24 घंटे उद्घाटन करते रहें, तो भी यू0पी0ए0 की जितनी स्कीम्स लागू हैं, उनका उद्घाटन भा0ज0पा0 का पूरा मंत्रिमण्डल नहीं कर पाएगा और आज वही हो रहा है।

यहां बहुत सारी चीजों की चर्चा हुई। हमें प्राइमरी स्कूल में टीचर बहुत डांटते थे कि घर के लिए दिया गया काम करते नहीं हो और कहते हो और काम दे दो। वह कहते थे, "आगे दौड़, पीछे छोड़" नहीं चलेगा। यहां लोगों से 2014 में बहुत वायदे किए गए थे। गरीब के account में 15 लाख रुपए जाएंगे, लेकिन उसका उल्लेख न तो महामहिम राष्ट्रपति जी के भाषण में है और न ही बजट में। इस देश के नौजवान, ऐसे लड़के और लड़कियों की संख्या करोड़ों में है, जो आप से काम मांगते हैं। उनमें से कुछ ने अच्छी शिक्षा प्राप्त की है, कुछ ने कम प्राप्त की है, आपने उनसे 10 करोड़ jobs देने का, 2 करोड़ साल में देने का वायदा किया था, लेकिन उसका भी न माननीय राष्ट्रपति जी के

भाषण में कोई उल्लेख है और न ही बजट में। इस देश के अन्नदाता किसानों के साथ, जो खून-पसीना बहाकर इस देश को पालते हैं, उनसे वायदा किया गया था कि आपकी लागत पर 50 परसेंट profit देंगे। हालांकि अब कुछ नज़र आता है, लेकिन वह वायदा बहुत भयंकर है, मैं उस पर बाद में आऊंगा। एक और बड़ा वायदा डीजल, पेट्रोल और गैस की कीमतें कम करने का किया गया था। मुझे याद है हमारे दोनों सदनों के विपक्ष के नेता और आज के गृह मंत्री ढोल व तालियां बजाकर प्रदर्शन करते थे और भारत बंद होता था जब सब्जी, तेल, डीजल, गैस या पेट्रोल की कीमतों में 10 रुपए बढ़ते थे। जहां हमारे वक्त में गैस सिलिंडर का दाम 350 रुपए था, वह आज 800 रुपए में मिलता है। आज सब्जी, दालें और किसी भी चीज को हाथ लगाओ, तो वह कई सौ गुना महंगी है। मैं पेट्रोल व डीजल की कीमतों का जिक्र करूं। जहां हमारे वक्त में 111 और 120 डॉलर में एक बैरल तेल मिलता था ..(व्यवधान).. मैं सब से कम कीमत की बात कह रहा हूं, तब आज जितनी कीमत में डीजल, पेट्रोल मिलता है, उससे कम कीमत में हम लोगों को देते थे। आज तो 30 डॉलर प्रति बैरल से भी नीचे crude oil आ गया है, लेकिन आपने 60 से 70 रुपए प्रति लीटर डीजल व पेट्रोल पहुंचा दिया है। आज आपको जो पैसा डीजल, पेट्रोल से बचा, यदि हमारे वक्त में ऐसी कीमतें होतीं, तो हमने भारत में एक क्रांति और इंकलाब लाया होता, लेकिन आपके वक्त में ऐसा कुछ नहीं हुआ है। आप तो अभी भी हमारी स्कीम्स के फीते काटते हैं और उनका नाम बदलकर टेलिविजन और मीडिया में 24 घंटे दर्शाते हैं। आपका अपना कुछ नहीं है।

(2 ई/एएससी पर जारी)

ASC-KR/2E/4.10

श्री गुलाम नबी आज़ाद (क्रमागत) : माननीय डिप्टी चेयरमैन सर, प्रेजिडेंट एड्रेस में लिखा है, To make the country swachh by 2019. सर, जैसा मैंने कहा कि हमने यह "निर्मल भारत" की शक्ल में 2012 में शुरू किया था। सन् 2019 तक 12 करोड़ टॉयलेट्स बनाने का वायदा हुआ है। अभी केवल 50 per cent ही टॉयलेट्स बने हैं। मुझे 50 per cent पर कोई आपत्ति नहीं है। ठीक है कि अभी आधे टॉलेट्स ही बने हैं। जब पौने चार सालों आधे टॉयलेट्स बने हैं, तो आगे नौ या दस महीनों में, इलैक्शन मोड में कुछ महीनों के बाद बाकी के आधे टॉयलेट्स कैसे बन सकते हैं? U.N. Special Report में कहा गया है कि out of the constructed toilets are sustainable and safe, the rest 60 per cent are not usable. टॉयलेट के लिए पानी की कोई व्यवस्था नहीं है। आप अपने घर में देखें कि हम सभी लोग टॉयलेट्स में पानी का इस्तेमाल करते हैं। यदि एक परिवार के दो-चार लोग टॉलेट में चले जाएं और उसमें पानी न आए, तो हम उसको यूज़ करना बंद कर देते हैं। वह टॉयलेट किसी दूसरे आदमी के यूज़ के काबिल नहीं रहता है। आप इतने लोगों के लिए जो टॉयलेट्स बनाते हैं, अगर उनमें पानी की व्यवस्था न हो, फ्लश की व्यवस्था न हो, उसके सीवरेज के टैंक की व्यवस्था न हो, तो आप मुझसे कहिए, तो मैं बिना इस प्रकार की सुविधाओं के एक करोड़ टॉयलेट्स बनाकर दे दूंगा। आप चार दीवारी करिए और सीट रख दीजिए, तो टॉयलेट तैयार हो गया। मैं कांग्रेस पार्टी को quote नहीं कर रहा हूं, मैं यूएन रिपोर्ट को quote कर रहा हूं। एक RTI में गया है कि "स्वच्छ भारत" के लिए साढ़े पांच सौ करोड़

रुपए तीन साल में सिर्फ पब्लिसिटी के लिए खर्च हुए हैं। साढ़े पांच सौ करोड़ रुपए इसकी पब्लिसिटी पर खर्च हुए हैं और जो आधे बने हैं, उनमें से 67 per cent usable नहीं हैं। जो टॉयलेट्स इस्तेमाल के काबिल नहीं हैं, यह शायद उनके लिए पब्लिसिटी हो रही है। आपने एक नया नाम देकर हमारे 'निर्मल भारत' अभियान का यह हाल किया है।

सर, माननीय राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' का जिक्र किया गया है। मैं इसको बजट की दृष्टि से देखना चाहता हूँ। अभी तक यह 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' 161 districts में था और पिछले साल में इसका बजट 200 करोड़ था। इस साल से इसको 161 districts से बढ़ाकर 640 districts किया है। That is four times districts बढ़ा दिए हैं। मुझे ज्यादा mathematics नहीं आता है, लेकिन यहां Finance Minister बैठे हैं, तो मैं कहना चाहूंगा कि जब आपका बजट पिछले साल दो सौ करोड़ था, तो इस साल आठ सौ करोड़ होना चाहिए, लेकिन बजट में बढ़ोतरी कितनी है, सिर्फ 80 करोड़। हमने बजट से ही स्कीम का गला घोट दिया है। हमने districts तो बढ़ाए हैं चार गुना, लेकिन एमाउंट कुछ ही दशमलव बढ़ा दिया, तो यह स्कीम तो at the bursting शुरू में ही खत्म हो गई, लेकिन आज यह सबसे बड़ा मुद्दा है। माननीय प्रधान मंत्री जी, बेटी को पढ़ाओ, तो बाद की बात है, लेकिन आज बेटी बचाओ की सबसे बड़ी जरूरत है। आप सुबह का अखबार पढ़ नहीं सकते हैं, चाहे वह

हिन्दी का अखबार है या अंग्रेजी का अखबार है। आप टेलीविजन भी नहीं देख सकते हैं। यह 'बलात्कार' शब्द एक जगह नहीं है, बल्कि पूरे देश में सब जगह है।

(2F/LP पर जारी)

LP-KS/4.15/2F

श्री गुलाम नबी आज़ाद (क्रमागत) : आप नाराज हो जाएंगे, अगर मैं यह कहूंगा कि यह बीजेपी रूलिंग स्टेट्स में सबसे भयंकर है। हरियाणा तो गढ़ बन गया है, मध्य प्रदेश और यू.पी. में भी हाल बुरा है।

उपसभापति जी, हम बलात्कार के बारे में हमेशा सुनते थे कि यह बुरी बात है, लेकिन यह पहली दफा सुना है कि पाँच महीने की, तीन महीने की, चार महीने की, आठ महीने की बच्ची के साथ बलात्कार! जिस वक्त यहाँ माननीय राष्ट्रपति जी भाषण दे रहे थे, दोनों सदनों को संबोधित कर रहे थे, उस दिन भी यहाँ दिल्ली में आठ महीने की बच्ची के साथ बलात्कार हुआ। हर मिनट के बाद बलात्कार हो रहा है। इसके लिए इस सरकार ने क्या किया है? इसके लिए कौन-से कदम उठाए हैं? उन मासूम बच्चियों के लिए, जो अभी साल भर की भी नहीं हैं, उनके लिए आपने क्या प्रबंध किया है? हम यह कौन-से भारत का निर्माण कर रहे हैं? यह कौन-सा नया भारत है? इस नये भारत की हमने कल्पना नहीं की थी। माननीय उपसभापति जी, आप नहीं कह सकते कि नया भारत लाए हैं, क्योंकि अगर यह नया भारत है तो मुझे ऐसे नये भारत पर अफसोस है। हमें वह पुराना भारत दे दो, जो भारत हमने छोड़ा था। हमें यह भारत नहीं चाहिए, जहाँ हमारी बहू, बेटियाँ सुरक्षित नहीं हैं। मेरी बच्ची जाती है, तो मैं अपने सिक्युरिटी वाले -

क्योंकि आपकी सरकार ने सिक्युरिटी वाले विद्वानों को, इसलिए मैं कहीं अपने प्रोग्राम्स कैंसिल करके रात में उसको भेजता हूँ। इतना असुरक्षित यह देश बन गया है, यह शहर बन गया है, इस देश की राजधानी बन गई है!

उपसभापति जी, हमारे वक्त में भी निर्भया का एक केस हुआ था, लेकिन हम इतने सेंसेटिव थे कि हम तुरंत पार्लियामेंट में एक कानून लेकर आए। हम एक केस के लिए इतना बड़ा, मोटा कानून लेकर आए थे, लेकिन आज दिन में सैकड़ों, हजारों केस होते हैं, पर इस सरकार के सिर पर जूँ तक नहीं रेंगती, यह सरकार टस से मस नहीं होती।

उपसभापति जी, यहाँ "जन-धन योजना" की बात करते हैं। भाजपा का हर नेता, हर मंत्री "जन-धन योजना" की बात करता है। यह कोई बुरी बात नहीं है, लेकिन मेरे ख्याल में राजनीति में थोड़ी सी ईमानदारी की जरूरत है। ज्यादा तो नहीं, लेकिन थोड़ी सी ईमानदारी की जरूरत है। राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में सरकार की तरफ से 31 करोड़ बैंक एकाउंट्स की बात की गई है, लेकिन कितना अच्छा होता, अगर आप ऐसा कहते कि कि 24 करोड़, 30 लाख एकाउंट्स तब से, यूपीए सरकार में खुले हैं और बीजेपी के वक्त में सिर्फ सवा 7 करोड़ एकाउंट्स खुले हैं। आपने सवा 7 करोड़ एकाउंट्स खोले और हमने जो 24 करोड़, 30 लाख एकाउंट्स खोले, उनका नाम भी नहीं, जबकि चौबीस घंटे "जन-धन योजना" सुनते-सुनते हमारे कान पक गए। यदि आप उसका भी उल्लेख करते कि 80 परसेंट एकाउंट्स पहले खुले थे, तो अच्छा लगता। ठीक है, उस वक्त इस स्कीम का नाम "जन-धन योजना" नहीं था, स्कीम का

نام اलग था, लेकिन उस स्कीम का नाम बदल दिया गया। उस नई स्कीम में सवा 24 करोड़ में से आपने खोले सवा 7 करोड़, तो $\frac{3}{4}$ भाग हमारा और $\frac{1}{4}$ भाग आपका, लेकिन उस स्कीम का नाम बदल गया और उस स्कीम की वाह-वाह भी पूरे देश में हो रही है।

جناب غلام نبی آزاد: منتري بهی نہیں ہے، کوئی سرکار میں نہیں ہے، پردھان منتري بهی نہیں ہے۔ اس سے پہلے بهی 1977 میں آپ کی ہی پارٹی تھی۔ اس سے پہلے بهی دو پردھان منتري بن گئے، بلکہ تین پردھان منتري بن گئے۔ لال بہادر شاستري جي کانگریس کے تھے، لیکن دو غیر کانگریسی پردھان منتري بهی بن گئے۔ تو ایسا کہنے کے لیے میں بھارتیہ جنتا پارٹی کو دوش نہیں دیتا، یہ جو ڈر ان کے جیوت رہتے تھا، اب کچھ لیڈرس زندہ نہیں ہیں، لیکن اب ان کے بچوں سے بهی آپ کو رات کو نیند نہیں آتی تو میں کیا کروں؟ وہ ڈر بنا رہے۔

آپ نے جاتی واد کے بارے میں کہا۔ میں کہتا ہوں کہ جاتی واد تو ایک بہت پرانی چیز تھی۔ آزادی سے پہلے تھی۔ آج تو دیش کا بٹوارہ ہو گیا ہے، محلے محلے، گھر گھر میں بٹوارہ ہو گیا ہے۔ آج کوئی کسی کے ساتھ نہیں ہے۔ دھرموں کا بٹوارہ ہوا، جاتیوں کا بٹوارہ ہوا، ایک ایک دھرم کے کئی بٹوارے ہوئے۔ میں بعد میں جب ان باتوں پر آؤنگا، تب ان کا اُلکھ کرونگا۔

ٹشٹی کرن کے بارے میں کہا گیا۔ آپ ٹشٹی کرن کے سمبندھ میں جس طبقے کی بات کرتے تھے، آج دوسری طرح کا ٹشٹی کرن ہے۔ آج پارٹی کا ٹشٹی کرن ہے اور ایک ہی پارٹی چلا رہی ہے، اسی کی بات سنی جا رہی ہے۔

نیچے بلاک سے لیکر، گرام سیوک سے لیکر صرف اسی پارٹی کے آدمی کو کام ملیگا، اسی کو روزگار بھی ملے، اسی کو ٹھیکا بھی ملے گا، اتنی بھینکر بات آج تک اتیہاس میں نہ سنی تھی، نہ پڑھی تھی۔

مانیئے اُپ سبھاپتی جی، یہ سرکار ہر بات پر کہتی ہے کہ ہماری سرکار گیم چینجر ہے۔ یہ گیم چینجر نہیں ہے، یہ نیم چینجر ہے۔ جتنی بھی یوجنائیں ہیں۔ میرے پاس بہت بڑی سوچی ہے، لیکن میں 20-22 یوجناؤ کا ہی نام لونگا۔ جتنی بھی

اسکیمس ہیں، جتنی بھی یوجنائیں ہیں، جو 1985 کے بعد کانگریس شاسن میں، یوپی اے کے شاسن میں بنی تھیں، ان کے نام بدل دیئے گئے ہیں۔ اسی لیے میں کہتا ہوں کہ یہ گیم چینجر نہیں ہے، نیم چینجر ہے۔ اندرا آواس یوجنا، 1985 میں بنی تھی اور

این ڈی اے کی سرکار آنے کے بعد یہ پردھان منتری آواس یوجنا بن گئی۔ راجیو آواس یوجنا 2009 میں Centrally-sponsored Scheme بنی تھی، اب یہ Sardar Patel National Urban Housing Mission بن گئی۔ میں آپتی نہیں جتاتا ہوں کہ اس

میں کس کا نام آگیا، میں خالی نام بدلنے کی بات کرتا ہوں۔ نرمل بھارت ابھیان اب سُوچھ بھارت ابھیان بن گیا ہے۔ راجیوگاندھی گرامین وڈھوتی کر یوجنا کو اب دین دیال اپادھیائے گرام جیوتی یوجنا بنادیا ہے۔ Basic Savings Account، 2005 میں

بن گیا تھا، اسے اب جن دھن یوجنا بنادیا گیا۔ National Project on Management

of Soil Health and Fertility یہ یوجنا 2008 میں بنی تھی، اب یہ سوئل ہیلتھ کارڈ

اسکیم بن گئی۔ Swavalamban Pension Scheme for Unorganized Sector،

2010 میں بنی، اب یہ اٹل پنشن یوجنا بن گئی۔ ہم نے نیشنل اسکول ڈیولپمنٹ مشن

2010 میں بنایا تھا اب یہ اسکِل انڈیا بن گیا۔ JNNURM 2005 میں بنا تھا، جب میں اس کا منتری تھا، یہ اب AMRUT یوجنا بن گئی۔ Accelerated Irrigation Benefit Programme, 2007 میں بناتھا، یہ پردھان منتری کرشی سینچائی یوجنا بن گیا۔ ہم نے راشٹریہ کرشی وکاس یوجنا 2007 میں بنائی تھی، اب یہ پرمپراگت کرشی وکاس یوجنا بن گئی۔ National Agriculture Insurance Scheme (NAIS) ہم نے 1985 میں بنائی تھی، اب یہ پردھان منتری فصل بیمہ یوجنا بن گئی۔ نیشنل مینوفیکچرنگ پالیسی، 2011 میں ہم نے بنائی، یہ میک ان انڈیا بن گئی۔ National Maritime Development Scheme , 2005 میں بنی، اب یہ ساگرمالا بن گئی۔ ہم نے Fortified Urea Policy , 2005 میں بنائی، اب اس کا ہندی میں ترجمہ ہو گیا، تو نیم کوٹیڈ یوریا اسکیم بن گئی۔ جن اوشدھی اسکیم 2008 میں بنی تھی، تب بھی دوائیوں کی سیکڑوں، ہزاروں دکانیں کھلی تھیں، اب یکہ پردھان منتری جن اوشدھی یوجنا بن گئی۔ اب اس کا نام بدل گیا، تو یہ نئی یوجنا ہو گئی۔ جیسے بھارت کا نام اولڈ بھارت سے اب نیو بھارت ہو گیا ہے، یہ نیو انڈیا ہو گیا۔ آپ نے بھارت کو بھی نہیں چھوڑا۔ نیشنل گورننس پلان 2006 میں بنا، تو اب یہ ڈجیٹل انڈیا بن گیا۔ Universal Immunization Programme 1985, میں بنا تو اندر دھنُش بن گیا۔ National Optical Fibre Network , 2011 میں ہم نے بنایا، اب یہ بھارت نیٹ بن گیا۔ National Rural Livelihood Mission , 2005 میں بنا تھا، یہ دین دیال اپادھیائے گرامین اوشدھی یوجنا بن گئی۔ National Direct Benefit Transfer , 2013 میں

بنا، اب یہ پہل بن گیا۔ National Girl Child Day Programme , 2008 میں بنا تھا، اب یہ بیٹی بچاؤ، بیٹی پڑھاؤ بن گیا۔ اندرا گاندھی ماتر تو سہیوگ یوجنا 2010 میں بنی تھی، اب یہ پردھان منتری ماتر وندنا یوجنا بن گئی۔

یہ اتنی اسکیمس ہماری ہی ہیں، تو نئی اسکیمس کہاں ہیں؟ مائے پردھان منتری جی کو یاد ہوگا، میں نے سال 2014 یا 2015 میں بتایا تھا کہ اگر پورے پانچ سال بھی آپ اور آپ کا منتری منڈل 24 گھنٹے ادگھائن کرتے رہیں، تو بھی یوپی-اے۔ کی جتنی اسکیمس لاگو ہیں، ان کا ادگھائن بھاجپا کا پورا منتری منڈل نہیں کر پائے گا اور آج وہی ہو رہا ہے۔

یہاں بہت ساری چیزوں کی چرچا ہوئی۔ ہمیں پرائمری اسکول میں ٹیچر بہت ڈانٹتے تھے کہ گھر کے لئے دیا گیا کام کرتے نہیں ہو اور کہتے ہو اور کام دے دو۔ یہ کہتے تھے ' آگے دوڑ، پیچھے دوڑ، نہیں چلے گا۔ یہاں لوگوں سے 2014 میں بہت وعدے کئے گئے تھے۔ غریب کے اکائنت میں پندرہ لاکھ روپے جائیں گے، لیکن اس کا الیکھ نہ تو مہامہم راشٹرپتی جی کے بھاشن میں ہے اور نہ ہی بجٹ میں۔ اس دیش کے نوجوان، ایسے لڑکے اور لڑکیوں کی تعداد سیکڑوں میں ہے، جو آپ سے کام مانگتے ہیں۔ ان میں سے کچھ نے اچھی تعلیم حاصل کی ہے، کچھ نے کم حاصل کی ہے، آپ نے ان سے دس کروڑ جو بس دینے کا، دو کروڑ سال میں دینے کا وعدہ کیا تھا، لیکن اس کا بھی مائے راشٹر پتی جی کے بھاشن میں کوئی الیکھ ہے اور نہ ہی بجٹ میں۔ اس دیش کے ان-داتاؤں کسانوں کے ساتھ، جو خون پسینہ بہا کر اس دیش کو پالتے ہیں، ان سے وعدہ کیا گیا تھا کہ آپ کی

لاگت پر 50 فیصد پروفٹ دی گئے۔ حالانکہ اب کچھ نظر آتا ہے، لیکن وہ وعدہ بہت خطرناک ہے، مہی اس پر بعد مہی آؤں گا۔ ایک اور بڑا وعدہ ڈیزل، پیٹرول اور گیس کی قیمتیں کم کرنے کا کیا گیا تھا۔ مجھے یاد ہے ہمارے دونوں سدنوں کے وپکش کے نیتا اور آج کے ہوم منتری ڈھول اور تالیاں بجا کر پردرشن کرتے تھے اور بھارت بند ہوتا تھا جب سبزی، تیل، ڈیزل، گیس یا پیٹرول کی قیمتوں میں دس روپے بڑھتے تھے۔ جہاں ہمارے وقت میں گیس سلنڈر کا دام 350 روپے تھا، وہ آج 800 روپے میں ملتا ہے۔ آج سبزی، دالیں اور کسی بھی چیز کو ہاتھ لگاؤ، تو وہ کوئی سو گنا مہنگی ہے۔ میں پیٹرول و ڈیزل کی قیمتوں کا ذکر کروں۔ جہاں ہمارے وقت میں 111 اور 120 ڈالر میں ایک بیرل تیل ملتا تھا۔۔۔(مداخلت)۔۔۔ میں سب سے کم قیمت کی بات کر رہا ہوں، تب آج جتنی قیمت میں ڈیزل، پیٹرول ملتا ہے، اس سے کم قیمت میں ہم لوگوں کو دیتے تھے۔ آج تو تیس ڈالر پرتی بیرل سے بھی نیچے کروڈ-آئل آ گیا ہے، لیکن آپ نے ساٹھ سے ستر روپے پرتی لیٹر ڈیزل و پیٹرول پہنچا دیا ہے۔ آج آپ کو جو پیسہ ڈیزل، پیٹرول سے بچا، اگر ہمارے وقت میں ایسی قیمتیں ہوتیں، تو ہم نے بھارت میں ایک کرانتی اور انقلاب لایا ہوتا، لیکن آپ کے وقت میں ایسا کچھ نہیں ہوا ہے۔ آپ تو ابھی بھی ہماری اسیکمس کے فیتے کاٹتے ہیں اور ان کا نام بدل کر ٹیلی ویژن اور میڈیا میں چوبیس گھنٹے درشاتے ہیں۔ آپ کا اپنا کچھ نہیں ہے۔

ماننے ڈپٹی چیئرمین سر، پریزیڈینٹ ایڈریس میں لکھا ہے، To make the

country swachh by 2019. سر، جیسا میں نے کہا کہ ہم نے یہ "نرمل بھارت"

کی شکل میں 2012 میں شروع کیا تھا۔ سن 2019 تک بارہ کروڑ ٹائلیٹ بنانے کا وعدہ ہوا ہے۔ ابھی صرف پچاس فیصد ہی ٹائلیٹ بنے ہیں۔ مجھے پچاس فیصد پر کوئی آپٹی نہیں ہے۔ ٹھیک ہے ابھی آدھے ٹائلیٹ ہی بنے ہیں۔ جب پونے چار سالوں میں آدھے ٹائلیٹ بنے ہیں، تو آگے نو یا دس مہینوں میں، الیکشن موڈ میں کچھ مہینوں کے بعد باقی کے آدھے ٹائلیٹ کیسے بن سکتے ہیں؟ یو-این۔ اسپیشل رپورٹ میں کہا ہے کہ out of the constructed toilets are sustainable and safe, the rest 60 per cent are not usable. ٹائلیٹ کے لئے پانی کی کوئی ویوسٹھا نہیں ہے۔ آپ اپنے گھر میں دیکھیں کہ ہم سبھی لوگ ٹائلیٹس میں پانی کا استعمال کرتے ہیں۔ اگر ایک پریوار کے دو چار لوگ ٹائلیٹ اور اس میں پانی نہ آئے، تو ہم اس کو یوز کرنا بند کر دیتے ہیں۔ وہ ٹائلیٹ کسی دوسرے آدمی کے یوز کے قابل نہیں رہتا ہے۔ آپ اتنے لوگوں کے لئے جو ٹائلیٹس بناتے ہیں، اگر ان میں پانی کی ویوسٹھا نہ ہو، فلش کی ویوسٹھا نہ ہو، اس کے سیوریج کے ٹینک کی ویوسٹھا نہ ہو، تو آپ مجھ سے کہئے، تو میں بنا اس طرح کی سہولتوں کے ایک کروڑ ٹائلیٹ بنا کر دے دوں گا۔ آپ چار دیواری کرئے اور سیٹ رکھ دیجئے، تو ٹائلیٹ تیار ہو گیا۔ میں کانگریس پارٹی کو quote نہیں کر رہا ہوں، میں یو-این۔ رپورٹ کو quote کر رہا ہوں۔ ایک آرٹی۔آئی میں کہا گیا ہے کہ "سوچہ بھارت" کے لئے ساڑھے پانچ سو کروڑ روپے تین سال میں صرف پبلسٹی کے لئے خرچ ہوئے ہیں، ساڑھے پانچ سو کروڑ روپے اس کی پبلسٹی پر خرچ ہوئے ہیں اور جو آدھے بنے ہیں، ان میں سے 67 فیصد usable نہیں ہے۔ جو ٹائلیٹ استعمال کے قابل نہیں

ہے، یہ شاید ان کے لئے پیلسٹی ہو رہی ہے۔ آپ نے ایک نیا نام دے کر ہمارے 'نرمل بھارت' ابھیان کا یہ حال کیا ہے۔

سر، مائے راشٹریتی جی کے ابھیہاشن میں 'بیٹی بچاؤ، بیٹی پڑھاؤ' کا ذکر کیا گیا ہے۔ میں اس کو بجٹ کی درستی سے دیکھنا چاہتا ہوں۔ ابھی تک یہ 'بیٹی بچاؤ، بیٹی پڑھاؤ' 161 ڈسٹرکٹس میں تھا اور پچھلے سال میں اس کا بجٹ دوسو کروڑ تھا۔ اس سال سے اس کو 161 ڈسٹرکٹس سے بڑھا کر 640 ڈسٹرکٹس کیا ہے۔ That is four times districts بڑھا دئے ہیں۔ مجھے زیادہ mathematics نہیں آتا ہے، لیکن یہاں فائننس منسٹر بیٹھے ہیں، تو میں کہنا چاہوں گا کہ جب آپ کا بجٹ پچھلے سال دو سو کروڑ تھا، تو اس سال آٹھ سو کروڑ ہونا چاہئے، لیکن بجٹ میں بڑھوتری کتنی ہے، صرف اسی کروڑ۔ ہم نے بجٹ سے ہی اسکیم کا گلا گھونٹ دیا ہے۔ ہم نے ڈسٹرکٹس تو بڑھائے ہیں چار گنا، لیکن امانت کچھ کی اعشاریہ بڑھا دیا، تو یہ اسکیم تو at the bursting شروع میں ہی ختم ہو گئی، لیکن آج یہ سب سے بڑا مدعا ہے۔ مائے پردھان منتری جی، بیٹی کو پڑھاؤ، تو بعد کی بات ہے، لیکن آج بیٹی بچاؤ کی سب سے بڑی ضرورت ہے۔ آپ صبح کا اخبار پڑھ نہیں سکتے ہیں، چاہے وہ ہندی کا اخبار ہو یا انگریزی کا اخبار ہے۔ آپ ٹیلی ویژن بھی نہیں دیکھ سکتے ہیں۔ یہ 'بلا تکار' شبد ایک جگہ نہیں ہے، بلکہ پورے دیش میں سب جگہ ہے۔

آپ ناراض ہو جائیں گے، اگر میں یہ کہوں گا کہ یہ بی-جے پی- رولنگ اسٹیٹس میں سب سے خطرناک ہے۔ ہریانہ تو گڑھ بن گیا ہے، مدھیہ پردیش اور یو پی-اے- میں بھی حال برا ہے۔

آپ سبھا پتی جی، ہم بلاتکار کے بارے میں ہمیشہ سنتے تھے کہ یہ بری بات ہے، لیکن یہ پہلی دفعہ سنا ہے کہ پانچ مہینے کی، تین مہینے کی، چار مہینے کی، آٹھ مہینے کی بچی کے ساتھ بلاتکار ! جن وقت یہاں مائٹے راشٹرپتی جی بھاشن دے رہے تھے، دونوں سدنوں سے سمبودھت کر رہے تھے، اس دن بھی یہاں دہلی میں آٹھ مہینے کی بچی کے ساتھ بلاتکار ہوا۔ ہر منٹ کے بعد بلاتکار ہو رہا ہے۔ اس کے لئے اس سرکار نے کیا کیا ہے؟ اس کے لئے کون سے قدم اٹھائے ہیں؟ ان معصوم بچیوں کے لئے، جو ابھی سال بھی کی بھی نہیں ہیں، ان کے لئے آپ نے کیا انتظام کیا ہے؟ ہم یہ کون سے بھارت کا نرمان کر رہے ہیں؟ یہ کون سا نیا بھارت ہے؟ اس نئے بھارت کی ہم نے کلپنا نہیں کی تھی۔ مائٹے اپ سبھا پتی جی، آپ نہیں کہہ سکتے کہ نیا بھارت لائے ہیں، کیوں کہ اگر یہ نیا بھارت ہے تو مجھے ایسے نئے بھارت پر افسوس ہے۔ ہمیں وہ پرانا بھارت دے دو، جو بھارت ہم نے چھوڑا تھا۔ ہمیں یہ بھارت نہیں چاہئے، جہاں بہو، بیٹیاں محفوظ نہیں ہیں۔ میری بچی جاتی ہے، تو میں اپن سیکورٹی والے، کیوں کہ آپ کی سرکار نے سیکورٹی والے ودڈرا کئے، اس لئے میں کہیں اپنے پروگرامس کینسل کر کے رات میں اس کو بھیجتا ہوں۔ اتنی غیر محفوظ یہ دیش بن گیا ہے، یہ شہر بن گیا ہے، اس دیش کی راجدھانی بن گئی ہے۔

آپ سبھا پتی جی، ہمارے وقت میں بھی نربھیا کا ایک کیس ہوا تھا، لیکن ہم اتنے سینسٹو تھے کہ ہم فوراً پارلیمنٹ میں ایک قانون لے کر آئے۔ ہم ایک کیس

کے لئے اتنا بڑا، موٹا قانون لے کر آئے تھے، لیکن آج دن میں سیکڑوں، ہزاروں کیس ہوتے ہیں، پر اس سرکار کے سر پر جوں تک نہیں رینگتی، یہ سرکار ٹس سے مس نہیں ہوتی۔

اُپ سبھا پتی جی، یہاں 'جن-دھن یوجنا' کی بات کرتے ہیں۔ بھاجپا کا ہر نیتا،

ہر منتری، 'جن-دھن یوجنا' کی بات کرتا ہے۔ یہ کوئی بری بات نہیں ہے، لیکن میرے

خیال میں راجنیتی میں تھوڑی سی ایمانداری کی ضرورت ہے۔ زیادہ تو نہیں، لیکن تھوڑی سی ایمانداری کی ضرورت ہے۔ راشٹری جی کے ابھیہاشن میں سرکار کی طرف سے 31 کروڑ بینک اکاؤنٹس کی بات کی گئی ہے، لیکن کتنا اچھا ہوتا، اگر آپ ایسا

کہتے کہ 24 کروڑ، 30 لاکھ اکاؤنٹس تب سے، یوپی-اے۔ سرکار میں کھلے ہیں اور

بی-جے پی۔ کے وقت میں صرف سوا سات کروڑ اکاؤنٹس کھلے ہیں۔ آپ کے سوا سات کروڑ اکاؤنٹس کھولے اور ہم نے جو 24 کروڑ، 30 لاکھ اکاؤنٹس کھولے، ان کا نام بھی

نہیں، جبکہ چوبیس گھنٹے 'جن-دھن یوجنا' سنتے سنتے ہمارے کان پک گئے۔ اگر آپ

اس کا بھی الیکھ کرتے کہ اسی فیصد اکاؤنٹس پہلے کھلے تھے، تو اچھا لگتا۔ ٹھیک ہے،

اس وقت اس اسکیم کا نام 'جن-دھن یوجنا' نہیں تھا، اسکیم کا نام الگ تھا، لیکن اس اسکیم

کا نام بدل دیا گیا۔ اس نئی اسکیم میں سوا چوبیس کروڑ میں سے آپ نے کھولے سات

کروڑ، تو تین چوتھائی حصہ ہمارا اور ایک چوتھائی حصہ آپ کا، لیکن اس اسکیم کا نام

بدل گیا اور اس اسکیم کی واہ-واہ بھی پورے دیش میں ہو رہی ہے۔

संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री विजय गोयल) : आपके आंकड़े ठीक नहीं हैं।

श्री गुलाम नबी आज़ाद : हमारे आंकड़े बहुत ठीक हैं, बस हमें रीपैकेजिंग नहीं आती है। ..(व्यवधान)..हमें पैकेजिंग और रीपैकेजिंग नहीं आती है। ..(व्यवधान)..मैं इसी सदन में पहले भी कह चुका हूँ, माननीय प्रधान मंत्री जी को याद होगा या नहीं। तीन साल पहले मैंने कहा था कि अगर भारतीय जनता पार्टी सत्ता से बाहर भी होती है, तो पैकेजिंग और रीपैकेजिंग के लिए जब ग्लोबल टेंडर्स होंगे, तो पूरी दुनिया में सबसे बड़ा टेंडर भारतीय जनता पार्टी को मिलेगा। पूरी दुनिया से जापान, अमरीका, चीन, रशिया, यूरोपीय देशों के पैकेजिंग के, रीपैकेजिंग के जितने ठेके दिए जाएंगे, वे आपको दिए जाएंगे, क्योंकि आपसे बड़ी रीपैकेजिंग किसी को आती नहीं है।

(2G/KLG पर जारी)

KLG-RSS /2G/4.20

श्री गुलाम नबी आज़ाद (क्रमागत) : हम तो बुद्ध हैं, हमें तो पैकेजिंग भी नहीं आती, रीपैकेजिंग क्या करेंगे? हम तो सिर्फ 24 घंटे बैठो, योजना बनाओ, करो, पहुंचा दो, उसकी पब्लिसिटी भी हमने कभी नहीं की। हम लोगों ने कभी इतनी स्कीमों की प्रेस-काँफ्रेंस भी नहीं की। माननीय प्रधान मंत्री जी बैठे हैं, यहां तो ऑर्डर बाद में होना है, प्रेस काँफ्रेंस पहले हो जाती है। ...(व्यवधान)...

جناب غلام نبی آزاد : ہمارے آنکڑے بہت ٹھیک ہیں، بس ہمیں ری -پیکجنگ نہیں آتی

ہے۔۔۔(مداخلت)۔۔۔ ہمیں پیکجنگ اور ری -پیکجنگ نہیں آتی ہے۔۔۔ (مداخلت)۔۔۔ میں اسی

سदन میں پہلے بھی کہہ چکا ہوں، مائٹے پردھان منتری جی کا یاد ہوگا یا نہیں۔ تین سال

پہلے میں نے کہا تھا کہ اگر بھارتیہ جنتا پارٹی سٹہ سے باہر بھی ہوتی ہے، تو پیکجنگ

اور ری-پیکجنگ کے لئے جب گلوبل ٹینڈرس ہوں گے، تو پوری دنیا میں سب سے بڑا ٹینڈر بھارتیہ جنتا پارٹی کو ملے گا۔ پوری دنیا سے جاپان، امریکہ، چین، رشیا، یورپی دیشوں کے پیکجنگ کے، ری-پیکجنگ کے جتنے ٹھیکے دئے جائیں گے، وہ آپ کو دئے جائیں گے، کیوں کہ آپ سے بڑی ری-پیکجنگ کسی کو آتی نہیں ہے۔

ہم تو بدھو ہیں، ہمیں تو پیکجنگ بھی نہیں آتی، ری-پیکجنگ کیا کریں گے؟ ہم تو صرف چوبیس گھنٹے بیٹھو، یوجنا بناؤ، کرو، پہنچا دو، اس کی پیلسٹی بھی ہم نے کبھی نہیں کی۔ ہم لوگوں نے کبھی اتنی اسکیموں کی پریس-کانفرنس بھی نہیں کی۔ مائٹے پردھان منتری جی بیٹھے ہیں، یہاں تو آرڈر بعد میں ہونا ہے، پریس کانفرنس پہلے ہو جاتی ہے۔۔۔(مداخلت)۔۔۔

संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री विजय गोयल) : आपकी जो योजनाएं रही हैं ... (व्यवधान)...

श्री गुलाम नबी आज़ाद: आप तो पार्लियामेंटरी अफेयर्स देखते हैं, मैंने कई दफे कहा है कि पार्लियामेंटरी अफेयर्स के बारे में अपने लीडर से कुछ सुनिए, लीडर ऑफ द हाउस से कुछ सीखिए। पार्लियामेंटरी अफेयर्स मिनिस्टर का, जब अटल जी प्राइम मिनिस्टर बने थे, तो उन्होंने ओथ के बाद जो पहला टेलीफोन मुझे किया, उसमें कहा कि मैं मदन लाल खुराना को तुम्हारे पास भेज रहा हूँ, इसको ट्रेनिंग दे दो, क्योंकि मेरे हिसाब से हम हमेशा गौरव मानते थे कि तुम ऑपोजिशन के पार्लियामेंटरी अफेयर्स मिनिस्टर रहे, चूंकि मैं पांच साल पार्लियामेंटरी अफेयर्स में 1991 से 1996 तक रहा और वे लीडर ऑफ

द ऑपोजिशन थे, उन्होंने कहा कि मैं हमेशा समझता था कि तुम हमें रिप्रजेंट करते हो, सरकार को नहीं, आप जरा, इनको समझाओ। मैंने पहला लेक्चर उन्हें दिया था और आपके साथ भी एक घंटा जरूर बैठूंगा। आप कुछ नहीं सीखे, तो अपने लीडर से सीख लो। Parliamentary Affairs Minister is not supposed to interrupt.

جناب غلام نبی آزاد : آپ تو پارلیمنٹری افیئرس دیکھتے ہیں، میں نے کئی دفعہ کہا ہے کہ پارلیمنٹری افیئرس کے بارے میں اپنے لیڈر سے کچھ سنئے، لیڈر آف دی ہاؤس سے کچھ سیکھئے۔ پارلیمنٹری افیئرس منسٹر کا، جب اٹل جی پرائم منسٹر بنے تھے، تو انہوں نے اوتھ کے بعد جو پہلا ٹیلی فون مجھے کیا، اس میں کہا کہ میں مدن لان کھورانہ کو تہمارے پاس بھیج رہا ہوں، اس کو ٹریننگ دے دو، کیوں کہ میرے حساب سے ہم ہمیشہ گورو مانتے تھے کہ تم اپوزیشن کے پارلیمنٹری افیئرس منسٹر رہے، چونکہ میں پانچ سال پارلیمنٹری افیئرس سے 1991 سے 1996 تک رہا اور وہ لیڈر آف دی اپوزیشن تھے، انہوں نے کہا کہ میں ہمیشہ سمجھتا تھا کہ تم ہمیں رپریزینٹ کرتے ہو، سرکار کو نہیں، آپ ذرا، ان کو سمجھاؤ۔ میں نے پہلا لیکچر انہیں دیا تھا اور آپ کے ساتھ بھی ایک گھنٹہ ضرور بیٹھوں گا۔ آپ کچھ نہیں سیکھے، تو اپنے لیڈر سے سیکھ لو۔ Parliamentary Affairs Minister is not supposed to interrupt.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Why don't you teach him now?

श्री गुलाम नबी आज़ाद: सर, इसीलिए अब इस योजना पर कुछ ज्यादा नहीं कहूंगा, क्योंकि बहुत सारे मुद्दे हैं। मुद्रा योजना के बारे में भी बहुत बातें कही गई हैं। यह 1990 की स्कीम थी, जो बाद में मुद्रा योजना हो गई। इसके बारे में बहुत चर्चा होती है, लेकिन मुद्रा योजना में इनको जो मैक्सिमम पैसे मिल सकते हैं, वह 43,000/- रुपए मिल सकते हैं।

ऐसा कौन सा व्यापार है, जो 43,000/- रुपए में हो सकता है? देश का कोई भी आदमी 43,000/- रुपए में छोटे से छोटा बिजनेस नहीं कर सकता है। ... (व्यवधान)... उसके लिए भी 43,000/- रुपए में शायद आटा आएगा, दूसरा सामान आएगा, लेकिन जगह नहीं आएगी। अब हम उतने खुशकिस्मत तो नहीं हैं, बीजेपी के पास एक स्कीम थी, जहां 15,000 करोड़ में कुछ 80 हजार करोड़ बन सकते हैं, लेकिन वे हमसे शेयर नहीं करते। वे हमसे शेयर करते, तो देश कितना सुखी हो जाता। हमारा भी इस 43,000 में काम होता, लेकिन जो उन्होंने अपनी पार्टी तक ही सीमित रखा है, उसमें मैं विनती करता हूँ कि उसको सदन के साथ शेयर करें। हम भी अपनी पार्टी में उसका उपयोग करें, तो शायद हमारा भी कुछ उत्थान हो। देश के करोड़ों लोगों के साथ भी शेयर करें, दस करोड़ बच्चों के साथ, जिनके साथ वायदा किया है उनके साथ भी शेयर करें, ताकि उनका भी उत्थान हो।

सर, फॉर्मर्स के बारे में प्रेसिडेंट साहब के एड्रेस में लिखा गया है - The highest priority will be given to remove various difficulties faced by farmers and Government is committed to doubling the farmers' income by 2022. सबसे पहले तो मुझे यह समझ में नहीं आता कि इतने सालों से जब भी हम बजट बनाते आए हैं, तो 2010, 2011, 2012, 2013 रहता था, मगर यह पहली बार है कि बजट में हर स्कीम में 2022, तो क्या यह चार साल का बजट कैसे बन रहा है? मैं यह माननीय फाइनेन्स मिनिस्टर साहब को बता रहा हूँ कि इसमें 2022 तक का उल्लेख है। माननीय प्रधान मंत्री जी तो चार साल से कई चीजों को 2022, 2024 बता रहे हैं। मैं यह कह रहा

था कि इतने सालों से, अब हमें भी इस सदन में एकाध साल में 40 साल होने वाले हैं, हम सुनते आए हैं 2010, 2011, 2012, 2013, लेकिन पिछले एकाध साल से देख रहे हैं कि जो भी स्कीम बनी है, जिसको टालना हो, जिसका इलेक्शन से पहले जवाब न दो, उसको कहो 2022, फिर 2022 में देखेंगे, तब तक लोग भूल जाएंगे।

(2एच/एकेजी पर जारी)

AKG-KGG/2H/4.25

श्री गुलाम नबी आज़ाद (क्रमागत) : इसी तरह से आपने farmers के साथ भी 2014 में जो वादा किया था कि लागत plus 50 per cent profit, वह तो अभी तक हुआ नहीं, लेकिन अभी 2022 तक दूसरा लॉलीपॉप दे दिया। अभी पहला लॉलीपॉप तो मिला नहीं, दूसरा लॉलीपॉप दे दिया कि आपकी income दोगुनी हो जाएगी। अब मैं तो किसान हूँ, हमारे घर में भी जमीन, माल-मवेशी हैं, लेकिन जो सब लोग बताते हैं, जो इस चीज को अच्छी तरह से समझते हैं, वे यह कहते हैं। सबसे पहले मैं आपके Additional Secretary, Agriculture, श्री अशोक दलवई की recommendation के बारे में बताना चाहूँगा। जाहिर है सरकार ने कमिटी बनाई थी कि farmers की income 2022 तक दोगुनी होनी चाहिए। उसकी recommendation है कि Rs. 6.4 lakh crore investment is needed for that. Rs. 6.4 lakh crore! और agriculture की आपकी जो growth होनी चाहिए, वह 10 परसेंट से 12 परसेंट होनी चाहिए , then only can you think of it. आपकी growth 12 per cent हो, आप उस पर 6.5 लाख करोड़ रुपए

खर्च करें, तब यह सपना साकार होगा, लेकिन आपका जो रिकॉर्ड है, 4 सालों में आपकी जो average agricultural growth है, वह 1.9 परसेंट है। यह एक दफा एक साल ऊपर गया था, लेकिन आपकी average agricultural growth 1.9 परसेंट है। इस सदी में 2021 के आखिर तक यह growth 12 परसेंट होनी नहीं है, आप 50 साल हुकूमत करेंगे, तो भी आपने 6 लाख करोड़ रुपए देने नहीं है, तो उनकी income double नहीं होनी है। लिहाजा यह बहुत simple method है। आप क्यों ऐसे वादे करते हैं, जिनको निभाना बहुत मुश्किल होता है और जिनके लिए आपको पछताना भी पड़ता है? इस साल के agriculture budget में यह कितना बढ़ा है, 4,845 करोड़। अगर आपको इसे आने वाले 4 सालों में achieve करना था, तो इसके लिए इस दफा आपको सवा लाख करोड़ रुपए extra देने चाहिए थे, न कि साढ़े चार हजार करोड़। एक दफा फिर, अब मुझे यह कहना बहुत बुरा लगता है कि 'झूठा वादा', लेकिन आप किसानों के साथ सच्चा वादा नहीं कर रहे हैं, जो रोज मरते हैं, जो रोज आत्मदाह करते हैं, जो रोज खुदकुशी करते हैं। उनकी खुदकुशी पर मरहम लगाने के बजाय आप उनसे गलत वादा करते हैं, जो वादा आप कभी पूरा ही नहीं कर पाएँगे। इस पर मुझे घोर आपत्ति है।

माननीय President's Address में आपने लिखा है, "To ensure availability of two-square meals to every person, effective enforcement of National Food Security Act is necessary." शुक्र है कि अभी आप Food Security Act का नाम बदलना भूल गए हैं, शायद एकाध साल में यह बदल जाएगा, लेकिन मैं सुप्रीम कोर्ट को बधाई देता हूँ। सुप्रीम कोर्ट ने पिछले साल कहा है। The Supreme Court in July,

2017 has said that the National Food Security Act, 2013 has not been implemented properly and it is a pity that legislation enacted by Parliament for citizen's benefit was kept on the backburner by various States. यह मैं नहीं कह रहा हूँ, यह कांग्रेस का कोई नेता नहीं कह रहा है, यह सुप्रीम कोर्ट कह रहा है कि एक तरफ आप कह रहे हैं कि हम दो वक्त का खाना ensure करेंगे। यूपीए गवर्नमेंट थी और मैं यूपीए गवर्नमेंट के पीछे सोनिया गाँधी जी को बधाई देना चाहता हूँ कि यह उनका brainchild था कि food security होनी चाहिए। देश में जो गरीब हैं, जिनके पास रोजगार नहीं है, जो कमा नहीं सकते, जिनके पास जमीन नहीं है, उनके लिए दो रुपए/3 रुपए फी किलो अनाज होना चाहिए।

(2जे/एससीएच पर जारी)

SCH-KLS/4.30/2J

श्री गुलाम नबी आज़ाद (क्रमागत) : यह यूपीए की सबसे बड़ी उपलब्धि रही है और सुप्रीम कोर्ट आपको कहता है कि आप इसको ठीक तरह से लागू नहीं करते हैं।

आगे है, 'National Health Policy'. चार दिन टेलिविज़न पर 'National Health Policy' के बारे में डिस्कशन चला। इस दफा टेलिविज़न पर अगर किसी चीज़ पर सबसे ज्यादा डिस्कशन हुआ है, तो हेल्थ पर हुआ है। लेकिन बाद में बेचारे किसान जाग गए कि यह तो ऐसे ही था, जैसे 10 करोड़ नौजवानों को बाद में पता चला था कि यह तो जुमला ही था, उसी तरह से बेचारे हेल्थ वाले भी परेशान हैं कि हमको कुछ न कुछ मिलेगा, लेकिन उनको मिलना कुछ नहीं है। मैं पांच साल इस मिनिस्ट्री में रहा और उस

दौरान अमरीका के हेल्थ मिनिस्टर के साथ कई मीटिंग्स हुईं। प्राइम मिनिस्टर टोनी ब्लेयर ने चंद देशों के हेल्थ मिनिस्टर्स को बुलाया था, हमें भी बुलाया कि इस इंश्योरेंस स्कीम के बारे में बताइए। दोनों देशों ने कहा कि इस इंश्योरेंस स्कीम ने हमको लूट लिया और खा लिया। इन इंश्योरेंस कंपनियों ने तो पैसा बना लिया, लेकिन इससे लोगों का कुछ नहीं बना। प्लानिंग कमिशन में जब चर्चा हुई थी, तो मैं इतनी ढेर सारी किताबें लेकर गया था। आज मेरे पास किताबें नहीं थीं, लेकिन उस वक्त मिनिस्ट्री ने बहुत सारी किताबें दी थीं। मिनिस्ट्री भी अच्छी चीज़ है, ना कहोगे तब भी किताबें लाएगी और हां कहोगे तब भी किताबें लाएगी। उस वक्त उन्होंने यह केस लड़ने के लिए मुझे इतनी सारी किताबें दी थीं, जिसमें अमरीका, ब्रिटेन और कई कंट्रीज़ का उल्लेख था कि हेल्थ इंश्योरेंस स्कीम्स के माध्यम से इंश्योरेंस कंपनियों को फायदा होता है, लोगों को या पेशेंट्स को कोई फायदा नहीं होता है। यह तो मैं अमीर देशों की बात कर रहा हूँ, जिनके यहां जीडीपी का 10-15 प्रतिशत या 17 प्रतिशत खर्च होता है। हम तो अभी 1.5 प्रतिशत से ही जूझ रहे हैं, तो हमारा इंश्योरेंस कितना होगा और फायदा कितना होगा?

मैं माननीय प्रधान मंत्री जी और माननीय स्वास्थ्य मंत्री जी से कहना चाहूंगा कि यह स्कीम उठेगी ही नहीं। आपकी पहले एक इंश्योरेंस स्कीम थी, लेकिन 2015-16 में आपने एक रुपया भी उस पर खर्च नहीं किया। आपने 2016-17 में 1500 करोड़ रुपया इस स्कीम में रखा था, लेकिन सिर्फ 724 करोड़ रुपया ही खर्च किया, यानी आधे से भी कम पैसा इस पर खर्च किया गया और 776 करोड़ रुपया unspent रह गया। आपने इस स्कीम के लिए 2017-18 में 1000 करोड़ रुपये रखे, लेकिन सिर्फ 471 करोड़ रुपये ही

खर्च किए, यानी सिर्फ 35 प्रतिशत ही खर्च किए। आप दो-तीन साल से इस स्कीम के लिए जो पैसा दे रहे हैं, वह आधा भी खर्च नहीं हो रहा, सिर्फ 40-45 प्रतिशत खर्च हो रहा है। अब आप पूरे देश के लिए 2000 करोड़ रुपये की स्कीम बना रहे हैं, यह 2000 करोड़ रुपये की स्कीम शुरू कब होगी? यह कामयाब नहीं होनी है। इसके बजाय, हमने इस संबंध में जो कदम उठाए थे, आप सरकारी अस्पतालों को आगे बढ़ाए। प्राइवेट अस्पताल के लिए आप जो पांच लाख देंगे, आप मुझे बताइए, दो प्राइवेट हॉस्पिटल्स में आप डॉक्टर्स को दिखाइए, तो शाम को पांच लाख का बिल आ जाएगा, इसलिए हम यह सोचते थे कि सरकारी अस्पतालों में इलाज होना चाहिए, क्योंकि जितना पैसा हम इंश्योरेंस स्कीम पर लगाएंगे, अगर हम अपना ही सरकारी इन्फ्रास्ट्रक्चर मजबूत करने के लिए, डिस्ट्रिक्ट हेडक्वार्टर पर, रीजनल हेडक्वार्टर पर लगाएं, तो ज्यादा अच्छा रहेगा। आपने अपने बजट में 24 मेडिकल कॉलेज रखे हैं, लेकिन हमने 58 मेडिकल कॉलेज दिए थे। शायद हिस्ट्री में पहली दफा हमारे वक्त में हेल्थ मिनिस्ट्री, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया ने मेडिकल कॉलेज बनाने शुरू किए। सबसे पहले तो उन 58 मेडिकल कॉलेजों की तरफ आपका ध्यान होना चाहिए। 40 मेडिकल कॉलेजों को upgrade करके AIIMS like institutions बनाने के लिए पैसा रिलीज हुआ, sanction किया गया, उनको बना देना चाहिए।

(2K/RPM पर जारी)

श्री गुलाम नबी आज़ाद (क्रमागत) : सर, हमने नए डिस्ट्रिक्ट हॉस्पिटल्स, सब डिस्ट्रिक्ट हॉस्पिटल्स लगभग 40 से 50 हजार तक बनाए थे और उतने का ही एक्सपेंशन हो रहा था, उन्हें बनाना चाहिए था। मेरे ख्याल में, मैं अभी भी कहता हूँ, चाहे वे हमारे वक्त में सेंक्शन हुए, हमने पहली दफा 71 कैंसर इंस्टीट्यूट्स दिए और एक नेशनल कैंसर इंस्टीट्यूट, झज्जर में दिया, जिसका शायद दो-चार महीनों बाद माननीय प्रधान मंत्री जी उद्घाटन करेंगे। 2,500 करोड़ रुपए की लागत से नेशनल कैंसर इंस्टीट्यूट बन रहा है। माननीय डा. मनमोहन सिंह जी ने उसका फाउंडेशन स्टोन ले किया था और शायद वह एशिया का सब से आधुनिक और सबसे बड़ा कैंसर इंस्टीट्यूट होगा। उसके अलावा देश में कई कैंसर इंस्टीट्यूट्स स्टेट हैडक्वार्टर्स और रीजनल हैडक्वार्टर्स पर बन रहे हैं। उन्हें तुरन्त वार-फुटिंग पर बनाने की जरूरत है, बजाय इसके कि बीमा कंपनियों के माध्यम इलाज कराया जाए। इससे बीमा कंपनियां पैसा बनाएंगी और पेशेंट्स का कोई फायदा नहीं होगा।

उपसभापति महोदय, दो-तीन स्कीमें और हैं। start up, stand up और skill India. स्टार्ट अप अभी शुरू हुई है, लेकिन मंजिल पर अभी एक भी नहीं पहुंची है। स्टैंड अप, ये खड़ी तो हुई हैं, लेकिन बैठने के काबिल नहीं हैं। स्किल इंडिया तो असफल हुई, लेकिन kill India जरूर हुआ। ये तमाम शब्द टेलिविज़न, मीडिया, प्रिंट मीडिया, लिखनने और छापने में अच्छे लगते हैं, लेकिन इनमें दम कुछ भी नहीं है। सिर्फ स्टैंड ही है।

उपसभापति जी, आज पेपर में निकला है कि केवल 5 परसेंट ग्रामीण बच्चे वोकेशनल ट्रेनिंग ले रहे हैं। जहां पांच परसेंट वोकेशनल ट्रेनिंग रूरल यूथ ले रहा है, तो कहां है आपका स्किल इंडिया?

उपसभापति जी, अब मैं employment generation पर आता हूं। आपने देश के 10 करोड़ बच्चों के साथ वादा किया था कि उन्हें रोजगार दिया जाएगा, लेकिन वह तो हुआ नहीं। वर्ष 2015 में employment generation पहले पांच सालों में सबसे कम थी। वर्ष 2016 में सात सालों का रिकॉर्ड, unemployment में beat किया। वर्ष 2017 में आपने पिछले employment generation का रिकार्ड बीट किया, कोई employment ही नहीं दी। इस प्रकार से देखा जाए, तो आप वर्ष 2015, 2016 और वर्ष 2017 में unemployment generation का record आप beat कर रहे हैं।

उपसभापति जी, अब मैं कश्मीर के बारे में कहना चाहता हूं। Terrorist violence in the interiors of Jammu and Kashmir was directly related to the cross-border infiltration. With better coordination, the Army, paramilitary forces and Jammu and Kashmir Police are giving a befitting response to the perpetrators. यह एक ऐसा इश्यू है, जिसमें पूरा भारत आपके साथ रहा। पूरा भारत आपके साथ था, पूरी पार्टियां आपके साथ थीं, पूरा विपक्ष आपके साथ था और आपकी सरकार बनने के लिए 50 परसेंट रोल सुरक्षा का भी है, क्योंकि आपने, यानी माननीय प्रधान मंत्री जी ने स्वयं, देश में 600-700 मीटिंग्स कीं, सभी में आपने उस वक्त के

प्रधान मंत्री, उस वक्त के कांग्रेस के मंत्री, उस वक्त के विदेश मंत्री, उस वक्त के रक्षा मंत्री की आलोचना की और उनके खिलाफ बोलने का कोई भी मौका नहीं छोड़ा। तब

आपने कहा था कि निकम्मी सरकार है, कमजोर सरकार है और आपने यहां तक कहा कि मरो-मरो और डूब मरो, लेकिन हमने जुबान नहीं खोली।

(2 एल/पीएसवी पर जारी)

PSV-USY/2L/4.40

श्री गुलाम नबी आज़ाद (क्रमागत): आपने यह कहा था कि कमजोर सरकार है, आँख से आँख नहीं मिलाती। यह कहा था कि इनके मंत्री बिरयानी खाते हैं और कुछ नहीं बोलते हैं। यह कहते हैं कि कोई फॉरेन मिनिस्टर चाइना में ही रहना चाहता है, लेकिन वहाँ बात नहीं कर पाया। आपने कहा कि हमारे एक फौजी की गर्दन काट कर पाकिस्तानी ले गये और ये देखते रहे। माननीय प्रधान मंत्री जी, दो मिनट के लिए मान लिया कि हम कमजोर थे, लेकिन आज जम्मू-कश्मीर में जो हालात हैं, उस वक्त के हिसाब से हम कहते हैं कि हम महान हैं और आपकी सरकार सबसे कमजोर है, 70 सालों में सबसे कमजोर है। 70 सालों में सबसे ज्यादा अगर सीज़फायर वायलेशंस हुए हैं, किसी तीन साल के अरसे में, तो वह आपके वक्त में हुए हैं। चाहे वह इंटरनेशनल बॉर्डर पर हो, जम्मू, सांबा, कठवा में हो या राजौरी-पुंछ के एलओसी पर हो, सबसे ज्यादा सीज़फायर वायलेशंस हुए हैं। इतने छोटे से समय में वार को छोड़ कर, लड़ाई को छोड़ कर, सबसे ज्यादा फौजी अगर मरे हैं, बॉर्डर के सिक्योरिटी फोर्सों के लोग

सबसे ज्यादा मरे हैं, वह इस वक्त मरे हैं। युद्ध के मैदान में छोड़िए, सबसे ज्यादा अगर सिविलियंस मरे हैं, तो इन तीन सालों में मरे हैं, चाहे वह कश्मीर हो या जम्मू हो। चार ही कल मरे, अभी परसों ही कुछ और मरे थे। मेजर मरते हैं, कैप्टन मरते हैं, कर्नल मरते हैं। मान लीजिए, यह सरकार भूल गई।

अभी मैं और अम्बिका सोनी जी जम्मू के कुछ इलाकों में होकर आये। उन लोगों की हालत देखी नहीं जाती। पाकिस्तान की शेलिंग से दो दिन के अन्दर हमारे 8 सिविलियंस मारे गये, हमारे पाँच फौजी मारे गये। सैकड़ों घर बरबाद हुए, हजारों जानवर, भैंसों, गायों, बकरियाँ बरबाद हुए। आपके लोगों को, बीजेपी के लोगों को बॉर्डर पर नहीं जाने देते हैं। आपको इत्तिला है या नहीं? वे उनको नहीं जाने देते हैं, क्योंकि वे कहते हैं कि आपने तो उस वक्त विपक्ष के खिलाफ हमारे जज्बात उभारे थे, लेकिन जितना हम पिटे हैं, 70 सालों में कभी किसी भी सरकार के समय में नहीं पिटे हैं। आज जम्मू बॉर्डर पर, अखनूर से लेकर सांबा और कठवा के बॉर्डर तक तथा राजौरी से पुंछ तक जो हालत है, वह कोई भी धर्म का व्यक्ति हो, किसी भी जाति का हो, हिन्दू हो, मुसलमान हो, सिख हो या ईसाई हो, वह तीन साल से सो नहीं रहा है। कितनी दफा उनको घरों से पलायन करना पड़ता है। हमारे वक्त में कहीं 10 साल में या 15 साल में अगर होता भी तो एकाध गाँव होता, अभी 15-20 दिन पहले तकरीबन 75,000 लोगों ने बॉर्डर से पलायन किया। उनके लिए, सुरक्षा के लिए जगह नहीं है। उनके खाने-पीने की व्यवस्था नहीं है। वे बेचारे दर-बदर स्कूलों में फिर रहे हैं। उनके पास मवेशी नहीं हैं, घर नहीं है, अनाज नहीं है। हम कब से माँग कर रहे हैं कि उनके लिए सुरक्षित

जगह होनी चाहिए। मैं जब मुख्यमंत्री था, मैंने सेंट्रल गवर्नमेंट के बगैर ही अनाउंस किया था कि हम जम्मू में, सांबा में सुरक्षित जगह पर पाँच मरला जमीन देंगे। मेरे समय में, थोड़ी सी जमीन हमने acquire की थी। इससे पहले कि मैं अपना काम पूरा करता, आपके सहयोगियों ने, जो आज आपके सहयोगी हैं, उन्होंने सपोर्ट विद्‌ड्रॉ कर ली। ...*(व्यवधान)*... इसलिए की थी कि आप तो बड़े धर्म को मानने वाले हैं। उस तीर्थ स्थान के लिए मैंने जमीन दी थी, इसलिए आपके पार्टनर ने ...*(व्यवधान)*... मैंने अमरनाथ यात्रा के लिए जमीन दी थी, इसलिए सपोर्ट विद्‌ड्रॉ हो गई थी। अब आपकी भी जल्द ही हो जायेगी, आप फिक्र मत करिए। चूहा-बिल्ली का खेल तो वहाँ रोज चल रहा है।

मैं यह कहना चाहता हूँ कि जम्मू में बॉर्डर पर लोग बहुत तंग हैं, मायूस हैं। वहाँ आज भयंकर हालत है। कश्मीर में तो जितनी गरीबी और जहालत आप डाल सकते थे, ला सकते थे-- उसकी वजह क्या है, क्योंकि इस सरकार के पास कोई पॉलिसी नहीं है। कभी hot pursuit की बात करते हैं, तो कभी कोई और बात करते हैं। कभी कुछेक लोगों को एनआईए तक अन्दर ठोकते हैं, तो कभी उनके पीछे फिर यहाँ से interlocutor भेजते हैं, बात करने के लिए।

(2एम/वीएनके पर जारी)

VNK-PK/2M/4.45

श्री गुलाम नबी आज़ाद (क्रमागत) : ये दोनों चीजें नहीं होती हैं, hot pursuit तो hot pursuit या बातचीत तो बातचीत। जब हमने शुरू में कहा कि बातचीत कीजिए, तो हमने कहा कि ये तो पाकिस्तानी हैं, मेरे कहने का मतलब गुलाम नबी आज़ाद नहीं,

बल्कि जब अपोजिशन वाले कहते थे कि इनको बड़ी सहानुभूति है, इनको बड़ी हमदर्दी है, इनको पाकिस्तान के साथ बड़ा प्यार है और यह जो हुर्रियत वाले हैं, ये बातचीत की बात करते हैं। उसके बाद हमने कहा कि चलो, हम चुप बैठते हैं, हम कुछ बात नहीं करेंगे, आप जो मरज़ी, वह करो। अब आप चार साल न बात कर रहे हैं, न आपका hot pursuit चल रहा है, कुछ भी नहीं चलता है और इस बीच में जम्मू-कश्मीर के लोग तबाह और बरबाद हो गए, यह मैं इस सदन में आपको बताना चाहता हूँ। आप लोगों ने कहा है, 'Due to successful diplomatic efforts' उस पर हमारे दूसरी साथी, आनन्द शर्मा जी बोलेंगे, लेकिन क्या हुआ? आप अज़हर मसूद का कुछ कर नहीं पाए, चीन ने आपको करने नहीं दिया। Membership of Nuclear Suppliers Group के संबंध में भी आप कुछ नहीं कर पाए, चीन ने आपको करने ही नहीं दिया। चीन आपको UN Security Council का मेम्बर बनने नहीं देता है, तो आपकी क्या कूटनीति है, कौन-सी कूटनीति है?

महोदय, मैं आखिर में ट्रिपल तलाक पर आना चाहूंगा। महामहिम राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में ट्रिपल तलाक के बारे में कहा गया है। यह माना कि बीजेपी की सरकार ने पहले अपोजिशन की पोलिटिकल पार्टियों को बांटा, उनको डिवाइड किया। किसी को ईडी से डरा कर, किसी को इनकम टैक्स से डरा कर, किसी को एनआईए से डरा कर बांटा, क्योंकि आज राजनीति ज्यादा हो रही है, आज डराओ वाली राजनीति सबसे ज्यादा हो रही है। फिक्स करने वाली राजनीति ज्यादा हो रही है। हमने यह राजनीति कभी नहीं देखी। हमारे वक्त में, जब हम राजनीति में छोटे ही थे, तब कहते थे कि यह

बीजेपी का financer है, इसको मत छेड़ना। आज तो ढूँढ़ कर कहता कि तुम कहो कि तुम कांग्रेस के हो, तुम समाजवादी के हो, तुम बीएसपी के हो, तुम ममता के हो, तुम उसके समर्थक हो, ताकि तुमको अंदर डालेंगे। कहने का मतलब यह है कि बात भी नहीं करनी है। माननीय प्रधान मंत्री जी, आप समझ नहीं सकते, इतना डर, इतना भय, इतना खौफ है देश में। सत्ता में रह कर ये चीजें नहीं दिखती हैं। यह भय ठीक नहीं है। अगर अफसर काम न करे, तो उसको भय हो, यह बहुत अच्छी बात है। अगर कोई करप्शन करते हुए पकड़ा जाए, तो उसके लिए ऐसा हो। हमने भी इसके लिए सख्त कानून बनाया, शायद दुनिया का पहला कानून हमने जम्मू-कश्मीर में बनाया कि उसकी प्रॉपर्टी अटैच की जाए। उससे डर है, लेकिन यह कि किसी अपोजिशन वाले के घर जाऊं, उससे बात करूं, उससे टेलीफोन पर बात करूं.... तो मैं कोई बिजनेस नहीं कर सकता, तिजारत नहीं कर सकता, institution नहीं चला सकता, माननीय प्रधान मंत्री जी, यह भय देश के लिए ठीक नहीं है। देश के लोकतंत्र के लिए ठीक नहीं है। Freedom of speech, freedom of socializing, freedom of business, ये सब तो होने चाहिए। आज हमसे फोन पर कोई बात नहीं करता, क्योंकि वह फोन टैप हो जाएगा। हमने तो कभी नहीं यह किया। हमने कोई टैप नहीं किया। हमने यह सुना भी नहीं कि किसी का फोन टैप किया जाए। आज तक तो हमने यह सुना था कि किसी आतंकवादियों का फोन टैप होता है। जब मैं पहली बार चीफ मिनिस्टर बना, तो हम आतंकवादियों के फोन टैप करते थे, लेकिन लीडरों के फोन टैप नहीं होते थे। कश्मीर जैसे sensitive area में मैं वहां तीन साल रहा, उस दरम्यान किसी ने हमसे यह पूछने

की जुर्रत नहीं की कि हम किसी लीडर का फोन टैप करें या करना चाहते हैं, चाहे वह विपक्ष का लीडर हो या कोई और हो या उसके लिंक्स कुछ भी हों except for terrorism. आज तो आपने हमें terrorist बना दिया, international terrorist बना दिया। आपने अपोजिशन को ही terrorist बना दिया। इस तरह के भय, डर और खौफ की बदौलत जीतना हुआ, तो यह क्या जीतना हुआ?

मैंने गुजरात में ही देखा, मैंने अपने भाषण की ज्यादा publicity नहीं ली, लेकिन मुझे लोगों ने कहा कि यहां कहा जाता है कि एक हजार लोग यहां हैं, इनमें से सात सौ हमारे हैं यानी बीजेपी के हैं और अगर सात सौ से ऊपर वोट आ गए, तो आपने वोट दिया और अगर सात सौ ही रहे, तो इसका मतलब है कि सिर्फ बीजेपी वाले ने वोट दिया है, आपने नहीं दिया है, इसलिए तुम्हारी खैर नहीं।

(2एन/एनकेआर-पीबी पर जारी)

NKR-PB/2N/4.50

श्री गुलाम नबी आज़ाद (क्रमागत) : यह कौन-सा वोट मांगने का, वोट garner करने का तरीका है कि आप डराकर , धमकाकर वोट ले लो। डरा-धमकाकर तो हम भी हिन्दुस्तान में 70 साल या उससे आगे, 200 साल तक हुकूमत कर सकते थे। मैं आपसे विनती करता हूं कि ऐसी राजनीति मत करिए।..(व्यवधान).. उस पर आप बहुत रोटियां सेंक चुके हैं, दस दफा कह चुके हैं। ..(व्यवधान) ऐसी चीजों की वजह से ही आपकी पहचान हुई, वरना आपको पहचानता ही कौन था?..(व्यवधान)..

महोदय, ट्रिपल तलाक का हम समर्थन करते हैं, लेकिन ट्रिपल तलाक के दो भाग हैं। लॉ मिनिस्टर साहब को मैंने समझाया था कि ट्रिपल तलाक के दो भाग हैं - एक अच्छी भावना से तलाक और दूसरा कम्युनिटी को साफ करने की भावना से तलाक। अच्छी भावना है - Instant Triple Talaq - तलाक, तलाक, तलाक - चाहे आप तलाक-ए-बिद्दत टेलीफोन पर करें, एस.एम.एस. से करें या ज़ुबानी करें - उसके हम खिलाफ हैं, लेकिन उसका दूसरा पार्ट बहुत खतरनाक है - जो आप illegally करते हो, उसे legal बनाकर करना चाहते हो। वह है कि इसे आप Criminal Act में लाकर पति को जेल में डाल दो। जब तक पति वापस आए, उसकी पत्नी कहां रहेगी, उसके बच्चे कहां रहेंगे, वे खाएंगे कहां से, कहां से पाएंगे ? पहले आपने शिया-सुन्नी को बांटा और अब पति-पत्नी को बांट रहे हैं। किसी को तो छोड़ दीजिए, कोई घर तो आप छोड़ दीजिए। पहले polarization करके मुझे और आनन्द शर्मा जी को बांट दिया। ..(व्यवधान).. मैं यहां धर्म की बात कहता हूं। फिर मुझे और अग्रवाल जी को बांट दिया। मुझे अपने आपको ही बांट दिया, polarization के ज़रिए दो धर्मों का बंटवारा। Casteism तो पहले से ही था, लेकिन दो धर्मों का बंटवारा इस सरकार में हुआ। फिर शिया-सुन्नी का बंटवारा किया और कहा कि शिया हमारे और सुन्नी दूसरी पार्टियों के। अब सुन्नियों में भी जो मर्द और औरत थे, उनका भी बंटवारा कर दिया - मर्द को जेल में डालो और औरत से कह दिया कि तुम्हारी समस्या का हमने समाधान कर दिया। ..(व्यवधान).. यह कौन-सा बंटवारा है ? क्यों आप तोड़ रहे हैं ? यह minority community पहले ही टूटी है, गरीब है, उनमें डर है, भय है, Lynching से डरी हुई है, ट्रेन में डरती है, कार में

घूमने से डरती है। अगर किसी बैंक में एप्लीकेशन देती है तो बैंक लोन उसे मिलता नहीं। पति से साथ रह रही है, उसे भी आप नहीं रहने देंगे, पति को जेल में डालकर, तुम हमें वोट दे दो। खुदा के लिए कोई घर तो छोड़ो, कहीं तो माफी दे दो। इस तरह का ट्रिपल तलाक लाकर आप देश को बांटने का काम न करें। हमें अपना भारत लौटा दो। जो new भारत आपने आज बनाया है, हमें वह new भारत नहीं चाहिए। हमें old भारत चाहिए, हमें गांधी का भारत चाहिए, जहां हिन्दू, मुसलमान, सिख और ईसाई, वैसे सिख और ईसाई में तो कोई विवाद नहीं है, लेकिन जहां हिन्दू और मुसलमान एक दूसरे के लिए खून देते थे, वह पुराना भारत था, जिसे आपने वोट के लिए, सरकार के लिए polarize कर दिया और बराबर निरंतर करते जा रहे हैं, वह भारत हमें लौटा दो। हमें वह भारत लौटा दो, जिसमें डर नहीं हो, बांट नहीं हो। हमें वह भारत लौटा दो जिसमें दो महीने, तीन महीने या चार महीने की बच्ची के साथ बलात्कार न होता हो। उस भारत की हमें जरूरत है। इन्हीं शब्दों के साथ, माननीय उपसभापति साहब, मैं आपका धन्यवाद करता हूँ और महामहिम राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर जो यहां धन्यवाद-प्रस्ताव माननीय अमित शाह जी ने रखा है, उसका समर्थन करता हूँ, जय हिंद!

(समाप्त)

جناب غلام نبی آزاد : سر، اسی لئے اب اس یوجنا پر کچھ زیادہ نہیں کہوں گا، کیوں کہ بہت سارے مدّے ہیں۔ مدرا یوجنا کے بارے میں بھی بہت باتیں کہیں گئی ہیں۔ یہ 1990 کی اسکیم تھی، جو بعد میں مدرا یوجنا ہو گئی۔ اس کے بارے میں بہت چرچا ہوتی ہے، لیکن مدرا یوجنا میں ان کو جو زیادہ سے زیادہ پیسے مل سکتے ہیں، وہ /-43,000

روپے مل سکتے ہیں۔۔۔ ایسا کونسا ویاپار ہے، جو/-43,000 میں ہو سکتا ہے؟ دیش کا کوئی بھی آدمی /-43,000 روپے میں چھوٹے سے چھوٹا بزنس نہیں کر سکتا ہے۔۔۔(مداخلت)۔۔۔ اس کے لئے بھی /-43,000 روپے میں شاید آٹا آئے گا، دوسرا سامان آئے گا، لیکن جگہ نہیں آئے گی۔ اب ہم اتنے خوش قسمت تو نہیں ہے، بی-جے-پی- کے پاس ایک اسکیم تھی، جہاں 15,000 کروڑ میں کچھ اسی ہزار کروڑ بن سکتے ہیں، لیکن وہ ہم نے شیئر نہیں کرتے۔ وہ ہم سے شیئر کرتے، تو دیش کتنا سکھی ہو جاتا۔ ہماری بھی اس /-43,000 میں کام ہوتا، لیکن جو انہوں نے اپنی پارٹی تک ہی محدود رکھا ہے، اس میں میں ونٹی کرتا ہوں کہ اس کو سدن کے ساتھ شیئر کریں۔ ہم بھی اپنی پارٹی میں اس کا اپیوگ کریں، تو شاید ہمارا بھی کچھ اٹھان ہو۔ دیش کے کروڑوں لوگوں کے ساتھ بھی شیئر کریں، دس کروڑ بچوں کے ساتھ، جن کے ساتھ وعدہ کیا ہے ان کے ساتھ بھی شیئر کریں، تاکہ ان کا بھی اٹھان ہو۔

سر، فارمرس کے بارے میں پریزیڈینٹ صاحب کے ایڈریس میں لکھا گیا ہے The highest priority will be given to remove various difficulties faced by farmers and Government is committed to doubling the farmers' income by 2022. سے پہلے تو مجھے یہ سمجھ میں نہیں آتا ہے کہ اتنے سالوں سے جب بھی ہم بجٹ بناتے آئے ہیں، تو 2010، 2011، 2012، 2013 رہتا تھا، مگر یہ پہلی بار ہے کہ بجٹ میں ہر اسکیم میں 2022، تو کیا یہ چار سال کا بجٹ کیسے بن رہا ہے؟ میں مائٹے فائننس منسٹر صاحب کو بتا رہا ہوں کہ اس میں 2022 تک کا الیکھ ہے۔ مائٹے پردھان منتری جی تو چار سال سے کئی چیزوں کو 2022، 2024 بتا رہے ہیں۔ میں یہ کہہ رہا

تھا کہ اتنے سالوں سے، اب ہمیں بھی اس سدن میں ایک-آدھ سال میں چالیس سال ہونے والے ہیں، ہم سنتے آئے ہیں 2010، 2011، 2012، 2013 لیکن پچھلے ایک-آدھ سال سے دیکھ رہے ہیں کہ جو بھی اسکیم بنی ہے، جن کو ٹالنا ہو، جس کا الیکشن سے پہلے جواب نہ دو، اس کو کہو 2022، پھر 2022 میں دیکھیں گے، تب تو لوگ بھول جائیں گے۔

اسی طرح سے آپ نے فارمرس کے ساتھ بھی 2014 میں جو وعدہ کیا تھا کہ لاگت پلس پچاس فیصد پروفٹ، وہ تو ابھی تک ہوا نہیں، لیکن ابھی 2022 تک دوسرا لولی پاپ دے دیا۔ ابھی پہلا لولی پاپ تو ملا نہیں، دوسرا لالی پاپ دے دیا کہ آپ کی انکم دوگنی ہو جائے گی۔ اب میں تو کسان ہوں، ہمارے گھر میں بھی زمین، مال مویشی ہیں، لیکن جو سب لوگ بتاتے ہیں، جو اس چیز کو اچھی طرح سے سمجھتے ہیں، وہ یہ کہتے ہیں، سب سے پہلے میں آپ کے ایڈیشنل سکرپٹری، ایگریکلچر، شری اشوک دلوی کی recommendation کے بارے میں بتانا چاہوں گا۔ ظاہر ہے سرکار نے کمیٹی بنائی تھی کہ فارمرس کی انکم 2022 تک دوگنی ہونی چاہئے۔ اس کی recommendation

ہے کہ Rs. 6.4 lakh crore investment is needed for that. Rs. 6.4 lakh crore! اور ایگریکلچر کی آپ کی جو گروتھ ہونی چاہئے، وہ دس فیصد سے بارہ فیصد ہونی چاہئے، then only can you think of it. آپ کی گروتھ بارہ فیصد ہو، آپ اس پر ساڑھے چھ لاکھ کروڑ روپے خرچ کریں، تب یہ سپنا ساکار ہوگا، لیکن آپ کا جو ریکارڈ ہے، چار سالوں میں آپکی جو ایوریج ایگریکلچر گروتھ ہے، وہ 1-9

فیصد ہے۔ یہ ایک دفعہ ایک سال اوپر گیا تھا، لیکن آپ کی ایوریج ایگریکلچر گروتھ 1-9 فیصد ہے۔ اس صدی میں 2021 کے آخر تک یہ گروتھ بارہ فیصد ہونی نہیں ہے، آپ پچاس سال حکومت کریں گے، تو بھی آپ نے چھ لاکھ کروڑ روپے دینے نہیں ہے، تو ان کی انکم ڈبل نہیں ہونی ہے۔ لہذا یہ بہت simple method ہے۔ آپ کیوں ایسے وعدے کرتے ہیں، جن کو نبھانا بہت مشکل ہوتا ہے اور جن کے لئے آپ کو پچھتانا بھی پڑتا ہے؟ اس سال کے ایگریکلچر بجٹ میں یہ کتنا بڑھا ہے، 4,845 کروڑ۔ اگر آپ کو اسے آنے والے چار سالوں میں اچھو کرنا تھا، تو اس کے لئے اس دفعہ آپ کو سوا لاکھ کروڑ روپے ایکسٹرا دینے چاہئے تھے، نہ کہ ساڑھے چار ہزار کروڑ۔ ایک دفعہ پھر، اب مجھے یہ کہنا بہت برا لگتا ہے کہ 'جھوٹا وعدہ'، لیکن آپ کسانوں کے ساتھ سچا وعدہ نہیں کر رہے ہیں، جو روز مرتے ہیں، جو روز آتمداہ کرتے ہیں، جو روز خودکشی کرتے ہیں۔ ان کی خودکشی پر مرہم لگانے کے بجائے آپ ان سے غلط وعدہ کرتے ہیں، جو وعدہ آپ کبھی پورا ہی نہیں کر پائیں گے۔ اس پر مجھے گھور آپٹی ہے۔

مائنٹے، پریزیڈینٹ ایڈریس میں آپ نے لکھا ہے -“To ensure availability of two-

square meals to every person, effective enforcement of National Food

Security Act is necessary.” ابھی آپ فوڈ سیکورٹی ایکٹ کا نام بدلنا بھول

گئے ہیں، شاید ایک-آدھ سال میں یہ بدل جائے گا، لیکن میں سپریم کورٹ کو بدھائی دیتا

ہوں۔ سپریم کورٹ نے پچھلے سال کہا ہے۔ The Supreme Court in July, 2017 has

said that the National Food Security Act, 2013 has not been implemented

properly and it is a pity that legislation enacted by Parliament for citizen's

benefit was kept on the backburner by various States. یہ کانگریس کا کوئی نیتا نہیں کہہ رہا ہے، یہ سپریم کورٹ کہہ رہا ہے کہ ایک طرف آپ کہہ رہے ہیں کہ ہم دو وقت کا کھانا ensure کریں گے۔ یوپی-اے۔ گورنمنٹ تھی اور میں یوپی-اے۔ گورنمنٹ کے پیچھے سونیا گاندھی جی کو بدھائی دینا چاہتا ہوں کہ یہ ان کا brainchild تھا کہ فوڈ سیکورٹی ہونی چاہئے۔ دیش میں جو غریب ہیں، جن کے پاس روزگار نہیں ہے، جو کما نہیں سکتے، جن کے پاس زمین نہیں ہے، ان کے لئے دو روپے / تین روپے فی کلو اناج ہونا چاہئے۔

یہ یوپی-اے۔ کی سب سے بڑی اہلبدھی رہی ہے اور سپریم کورٹ آپ کو کہتا ہے کہ آپ اس کو ٹھیک طرح سے لاگو نہیں کرتے ہیں۔

آگے ہے 'نیشنل ہیلتھ پالیسی'۔ چار دن ٹیلی ویژن پر 'نیشنل ہیلتھ پالیسی' کے بارے میں ڈسکشن چلا۔ اس دفعہ ٹیلی ویژن پر اگر کسی چیز پر سب سے زیادہ ڈسکشن ہوا ہے، تو ہیلتھ پر ہوا ہے۔ لیکن بعد میں بیچارے کسان جاگ گئے کہ یہ تو ایسا ہی تھا، جیسے دس کروڑ نوجوانوں کو بعد میں پتہ چلا تھا کہ یہ تو جملہ ہی تھا، اسی طرح سے بیچارے ہیلتھ والے بھی پریشان ہیں کہ ہم کو کچھ نہ کچھ ملے گا، لیکن ان کو ملان کچھ نہیں ہے۔ میں پانچ سال اس منسٹری میں رہا اور اس دوران امریکہ کے ہیلتھ منسٹر کے ساتھ کئی میٹنگس ہوئیں۔ پرائم منسٹر ٹونی بلئیر نے چند دیشوں کے ہیلتھ منسٹرس کو بلایا تھا، ہمیں بھی بلایا کہ اس انشورینس اسکیم کے بارے میں بتائیے۔ دونوں دیشوں نے کہا کہ اس انشورینس اسکیم نے ہم کو لوٹ لیا اور کہا لیا۔ ان انشورینس کمپنیوں نے تو پیسہ بنا لیا، لیکن اس سے لوگوں کا کچھ نہیں بنا۔ پلاننگ کمیشن میں جب چرچا ہوئی تھی، تو میں اتنی ڈھیر ساری کتابیں لے کر گیا تھا۔ آج میرے پاس کتابیں نہیں تھی، لیکن اس وقت منسٹری نے بہت ساری کتابیں دی تھیں۔ منسٹری بھی اچھی چیز

ہے، نہ کہوں گے تب بھی کتابیں لائے گی اور ہاں کہوں گے تب بھی کتابیں لائے گی۔ اس وقت انہوں نے یہ کیس لڑنے کے لئے مجھے اتنی ساری کتابیں دی تھیں، جس میں امریکہ، برٹین اور کئی کنٹریز کا الیکھ تھا کہ ہیلتھ انشورینس اسکیمس کے مادھیم سے انشورینس کمپنیوں کو فائدہ ہوتا ہے، لوگوں کو یا پیشینٹس کو کوئی فائدہ نہیں ہوتا ہے۔ یہ تو میں امیر دیشوں کی بات کر رہا ہوں، جن کے یہاں جی۔ڈی۔پی۔ کا دس، پندرہ فیصد یا سترہ فیصد خرچ ہوتا ہے۔ ہم تو ابھی ڈیڑھ فیصد سے ہی جوجھ رہے ہیں، تو ہمارا انشورینس کتنا ہوگا اور فائدہ کتنا ہوگا؟

میں مائٹے پردھان منتری جی اور مائٹے سواستھ منتری جی سے کہنا چاہوں گا کہ یہ اسکیم اٹھے گی ہی نہیں۔ آپ کی پہلے ایک انشورینس اسکیم تھی، لیکن 16-2015 میں آپ نے ایک روپیہ بھی اس پر خرچ نہیں کیا۔ آپ نے 17-2016 میں 1500 کروڑ روپیہ اس اسکیم میں رکھا تھا، لیکن صرف 724 کروڑ روپیہ ہی خرچ کیا، یعنی آدھے سے بھی کم پیسہ اس پر خرچ کیا گیا اور 776 کروڑ روپیہ unspent رہ گیا۔ آپ نے اس اسکیم کے لئے 18-2017 میں ایک ہزار کروڑ روپے رکھے، لیکن صرف 471 کروڑ روپے ہی خرچ کئے، یعنی صرف 35 فیصد ہی خرچ کئے۔ آپ دو تین سال سے اس اسکیم کے لئے جو پیسہ دے رہے ہیں، وہ آدھا بھی خرچ نہیں ہو رہا، صرف 45-40 فیصد خرچ ہو رہا ہے۔ اب آپ پورے دیش کے لئے دو ہزار کروڑ روپے کی اسکیم بنا رہے ہیں، یہ دو ہزار کروڑ روپے کی اسکیم کب شروع ہوگی؟ یہ کامیاب نہیں ہونی ہے۔ اس کے بجائے، ہم نے اس سمبندھ میں جو قدم اٹھائے تھے، آپ سرکاری اسپتالوں کو آگے بڑھائیے۔ پرائیویٹ اسپتال کے لئے آج جو پانچ لاکھ دیں گے، آپ مجھے بتائیے، دو پرائیویٹ اسپتالوں میں آپ ڈاکٹرس کو دکھائیے، تو شام کو پانچ لاکھ کا بل آ جائے گا،

اس لئے ہم یہ سوچتے تھے کہ سرکاری اسپتالوں میں علاج ہونا چاہئے، کیوں کہ جتنا پیسہ ہم انشورینس اسکیم پر لگائیں گے، اگر ہم اپنا ہی سرکاری انفراسٹرکچر مضبوط کرنے کے لئے، ڈسٹرکٹ ہیڈکوارٹر پر، ریجنل ہیڈکوارٹر پر لگائیں تو زیادہ اچھا رہے گا، آپ نے اپنے بجٹ میں چوبیس میڈیکل کالج رکھے ہیں، لیکن ہم نے اٹھاون میڈیکل کالج دئے تھے۔ شاید ہسٹری میں پہلی دفعہ ہمارے وقت میں ہیلتھ منسٹری، گورنمنٹ آف انڈیا نے میڈیکل کالج بنانے شروع کئے۔ سب سے پہلے تو ان اٹھاون میڈیکل کالجوں کی طرف آپ کا دھیان ہونا چاہئے۔ چالیس میڈیکل کالجوں کو upgrade کر کے AIIMS like institutions بنانے کے لئے پیسہ ریلیز ہوا، sanction کیا گیا، ان کو بنا دینا چاہئے۔

سر، ہم نے نئے ڈسٹرکٹ ہاسپٹلس، سب -ڈسٹرکٹ ہاسپٹل لگ بھگ چالیس سے پچاس ہزار تک بنائے تھے اور اتنے کا ہی ایکسپینشن ہو رہا تھا، انہیں بنانا چاہئے تھا، میرے خیال میں، میں ابھی بھی کہتا ہوں، چاہے وہ ہمارے وقت میں سینکشن ہوئے، ہم نے پہلی دفعہ 71 کینسر انسٹی ٹیوٹس دئے اور ایک نیشنل کینسر انسٹی ٹیوٹ، ججھر میں دیا، جس کا شاید دو چار مہینوں بعد مائے پردھان منتری جی ادگھاٹن کریں گے۔ 2500 کروڑ روپے کی لاگت سے نیشنل کینسر انسٹی ٹیوٹ بن رہا ہے۔ مائے ڈاکٹر منموہن سنگھ جی نے اس کا فائنڈیشن اسٹون لے لیا تھا اور شاید وہ ایشیا کا سب سے جدید اور سب سے بڑا کینسر انسٹی ٹیوٹ ہوگا۔ اس کے علاوہ دیش میں کئی کینسر انسٹی ٹیوٹس اسٹیٹ ہیڈکوارٹرس اور ریجنل ہیڈکوارٹرس پر بن رہے ہیں۔ انہیں فوراً وار -فٹنگ پر بنانے کی ضرورت ہے، بجائے اس کے کہ بیمہ کمپنیوں کے مادھیم سے علاج کرایا جائے۔ اس سے بیمہ کمپنیاں پیسہ بنائیں گی اور پیشینٹس کا کوئی فائدہ نہیں ہوگا۔

آپ سبھا پتی مہودے، دو تین اسکیمیں اور ہیں۔ اسٹارٹ -آپ، اسٹینڈ -آپ اور

اسکل انڈیا۔ اسٹارٹ -آپ ابھی شروع ہوئی ہے، لیکن منزل پر ابھی ایک بھی نہیں

پہنچی ہے۔ اسٹینڈ -آپ، یہ کھڑی تو ہوئی ہیں، لیکن بیٹھنے کے قابل نہیں ہے۔ اسکل

انڈیا تو ناکام ہوئی، لیکن kill India ضرور ہوا۔ یہ تمام شبد ٹیلی ویژن، میڈیا، پرنٹ

میڈیا، لکھنے اور چھاپنے میں اچھے لگتے ہیں، لیکن ان میں دم کچھ بھی نہیں ہے۔

صرف اسٹینڈ ہی ہے۔

آپ سبھا پتی، آپ پیپر میں نکلا ہے کہ صرف 5 فیصد گرامین بچے ووکیشنل

ٹریننگ لے رہے ہیں۔ جہاں پانچ فیصد ووکیشنل ٹریننگ رورل یوتھ لے رہے ہیں،

تو کہاں ہے آپ کا اسکل انڈیا؟

آپ سبھا پتی جی، اب میں ایمپلائمنٹ جنریشن پر آتا ہوں۔ آپ نے دیش کے دس

کروڑ بچوں کے ساتھ وعدہ کیا تھا کہ انہیں روزگار دیا جائے گا، لیکن وہ تو ہوا

نہیں، سال 2015 میں ایمپلائمنٹ جنریشن پہلے پانچ سالوں میں سب سے کم تھی۔

سال 2016 میں سات سالوں کا ریکارڈ، ان -ایمپلائمنٹ میں بیٹ کیا۔ سال 2017 میں

آپ نے پچھلے ایمپلائمنٹ جنریشن کا ریکارڈ بیٹ کیا، کوئی ایمپلائمنٹ ہی نہیں دی۔

اس طرح سے دیکھا جائے، تو آپ سال 2015، 2016 اور سال 2017 میں ان -

ایمپلائمنٹ جنریشن کا ریکارڈ آپ بیٹ کر رہے ہیں۔

آپ سبھا پتی جی، اب میں کشمیر کے بارے میں کہنا چاہتا ہوں۔ Terrorist

violence in the interiors of Jammu and Kashmir was directly related to

the cross-border infiltration. With better coordination, the Army, paramilitary forces and Jammu and Kashmir Police are giving a befitting response to the perpetrators. یہ ایک ایسا ایشو ہے، جس میں پورا بھارت آپ

ساتھ رہا۔ پورا بھارت آپ ساتھ تھا، پوری پارٹیاں آپ کے ساتھ تھیں، پورا وپکش آپ کے ساتھ تھا اور آپ کی سرکار بننے کے لئے پچاس فیصد رول سرکشا کا بھی ہے، کیوں کہ آپ نے، یعنی پردھان منتری جی نے خود، دیش میں چھ سو، سات سو میٹنگس کیں، سبھی میں آپ نے اس وقت کے پردھان منتری، اس وقت کے کانگریس کے منتری، اس وقت کے ودیش منتری، اس وقت کے رکشا منتری کی آلوچنا کی اور ان کے خلاف بولنے کا کوئی بھی موقع نہیں چھوڑا۔ تب آپ نے کہا تھا کہ نکمی سرکار ہے، کمزور سرکار ہے اور آپ نے یہاں تک کہا کہ مرو-مرو اور ٹوب مرو، لیکن ہم نے زبان نہیں کھولی۔

آپ نے یہ کہا تھا کہ کمزور سرکار ہے، آنکھ سے آنکھ نہیں ملاتی۔ یہ کہا تھا کہ ان کے منتری بریانی کھاتے ہیں اور کچھ نہیں بولتے ہیں۔ یہ کتھے ہیں کہ کوئی فارین منسٹر چائینا میں ہی رہنا چاہتا ہے، لیکن وہاں بات نہیں کر پایا۔ آپ نے کہا کہ ہمارے ایک فوجی کی گردن کاٹ کر پاکستانی لے گئے اور یہ دیکھتے رہے۔ مانیئے

پردہان منتری جی، دو منٹ کے لیے مان لیا کہ ہم کمزور تھے، لیکن آج جموں و کشمیر میں جو حالات ہیں، اس وقت کے حساب سے ہم کہتے ہیں کہ ہم مہان ہیں اور آپ کی سرکار سب سے کمزور ہے، ستر سالوں میں سب سے کمزور ہے۔ ستر سالوں میں سب سے زیادہ اگر سیز فائر وائینس ہوئے ہیں، کسی تین سال کے عرصے میں، تو وہ آپ کے وقت میں ہوئی ہیں۔ چاہے وہ انٹرنیشنل بارڈر پر ہو، جموں، سامبا، کٹھوا میں ہو یا راجوری پونچھ کے ایل او سی پر ہو، سب سے زیادہ سیز فائر وائینس ہوئے ہیں۔ اتنے چھوٹے سے وقت میں وار کو چھوڑ کر، لڑائی کو چھوڑ کر، سب سے زیادہ فوجی اگر مرے ہیں، بارڈر کے سکیورٹی فورسز کے لوگ سب سے زیادہ مرے ہیں، وہ اس وقت مرے ہیں۔ جنگ کے میدان میں چھوڑیے، سب سے زیادہ اگر سویلینس مرے ہیں۔ تو ان تین سالوں میں مرے ہیں، چاہے وہ کشمیر ہو یا جموں ہو۔ چار ہی کل مرے، ابھی پرسوں ہی کچھ اور مرے تھے۔ میجر مرتے ہیں، کپیٹن مرتے ہیں، کرنل مرتے ہیں۔ مان لیجئیے، یہ سرکار بھول گئی۔

ابھی میں اور امبیکا سونی جی جموں کے کچھ علاقوں میں ہو کر آئے۔ ان لوگوں کی حالت دیکھی نہیں جاتی۔ پاکستان کی شیلنگ سے دو دن کے اندر ہمارے آٹھ سویلینس مارے گئے، ہمارے پانچ فوجی مارے گئے۔ سیکڑوں گھر برباد ہوئے، ہزاروں جانور، بھینسیں گائیں، بکریاں برباد ہوئے۔ آپ کے لوگوں کو، بی جے پی کو

لوگوں کو بارڈر پر نہیں جانے دیتے ہیں۔ آپ کو اطلاع ہے یا نہیں؟ وہ ان کو نہیں جانے دیتے ہیں، کیوں کہ وہ کہتے ہیں کہ آپ نے تو اس وقت وپکش کے خلاف ہمارے جذبات ابھارے تھے، لیکن جتنا ہم پٹے ہیں، ستر سالوں میں کبھی کسی بھی سرکار کے وقت میں نہیں پٹے ہیں۔ آج جموں بارڈر پر، اخنور سے لیکر سامبا اور کٹھوا کے بارڈر تک تنہا راجوری سے پونچھ تک جو حالت ہے، وہ کوئی بھی دھرم کا ویکتی ہو، کسی بھی جاتی کا ہو، ہندو ہو، مسلمان ہو، سکھ ہو یا عیسائی ہو، وہ تین سال سے سو نہیں رہا ہے۔ کتنی دفعہ ان کو گھروں سے پلائن کرنا پڑتا ہے۔ ہمارے وقت میں کہیں دس سال میں یا پندرہ سال میں اگر ہوتا بھی تو ایک آدھ گاؤں ہوتا، ابھی پندرہ بیس دن پہلے تقریباً 75,000 لوگوں نے بارڈر سے پلائن کیا۔ ان کے لیے سرکشا کے لیے جگہ نہیں ہے۔ ان کے کھانے پینے کی ویوستھا نہیں ہے۔ وہ بیچارے در بدر اسکولوں میں پھر رہے ہیں۔ ان کے پاس مویشی نہیں ہیں، گھر نہیں ہے، اناج نہیں ہے۔ ہم کب سے مانگ کر رہے ہیں کہ ان کے لیئے سرکشت جگہ ہونی چاہئیے۔ میں جب مکھیہ منتری تھا، میں نے سینٹرل گورنمنٹ کے بغیر ہی انوائس کیا تھا کہ ہم جموں میں، سامبا میں سرکشت جگہ پر پانچ مرلہ زمین دیں گے۔ میرے وقت میں، تھوڑی سی زمین ہم نے ایکوائٹر کی تھی۔ اس سے پہلے کہ میں اپن کام پورا کرتا، آپ کے سہیوگیوں نے، جو آج آپ کے سہیوگی ہیں انہوں نے سپورٹ وڈڈرا کرلی۔

--(مداخلت)-- اس لیے کی تھی کہ آپ تو بڑے دھرم کو ماننے والے ہیں۔ اس تیرتھ استھان کے لیے میں نے زمین دی تھی اس لیے آپ کے پارٹنر نے --(مداخلت)-- میں نے امرناتھ یاترا کے لیے زمین دی تھی، اس لیے سپورٹ وڈ ڈرا ہوگئی تھی۔ اب آپ کی بھی جلد ہی ہو جائیگی، آپ فکر مت کیجیئے۔ چوہا بلی کا کھیل تو وہاں روز چل رہا ہے۔

میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ جموں میں بارڈر پر لوگ بہت تنگ ہیں، مایوس ہیں، وہاں آج بھینکر حالت ہے۔ کشمیر میں تو جتنی غریبی اور جہالت آپ ڈال سکتے تھے، لاسکتے تھے۔ اس کی وجہ کیا ہے، کیوں کہ اس سرکار کے پاس کوئی پالیسی نہیں ہے۔ کبھی hot pursuit کی بات کرتے ہیں، تو کبھی کوئی اور بات کرتے ہیں۔ کبھی کچھ ایک لوگوں کو این آئی اے تک اندر ٹھوکتے ہیں، تو کبھی ان کے پیچھے پھر یہاں سے interlocutor بھیجتے ہیں، بات کرنے کے لیے۔

یہ دونوں چیزیں نہیں ہوتیں ہیں، hot pursuit تو hot pursuit یا بات چیت تو

بات چیت۔ جب ہم نے شروع میں کہا کہ بات چیت کیجیئے، تو ہم نے کہا کہ یہ تو پاکستانی ہیں میرے کہنے کا مطلب غلام نبی آزاد نہیں بلکہ جب اپوزیشن والے کہتے تھے کہ ان کو بڑی سہانوبھوتی ہے، ان کو بڑی ہمدردی ہے، ان کو پاکستان کے

ساتھ بڑا پیار ہے اور یہ جو حریت والے ہیں، یہ بات چیت کی بات کرتے ہیں۔ اس کے بعد ہم نے کہا کہ چلو ہم چپ بیٹھتے ہیں، ہم کچھ بات نہیں کریں گے، آپ جو مرضی، وہ کرو۔ اب آپ چار سال نہ بات کر رہے ہیں، نہ آپ کا hot pursuit چل رہا ہے، کچھ بھی نہیں چلتا ہے اور اس بیچ میں جمو وکشمیر کے لوگ تباہ اور برباد ہو گئے، یہ میں اس سدن میں آپ کو بتانا چاہتا ہوں۔ آپ لوگوں نے کہا ہے، 'Due to successful diplomatic efforts' اس پر ہمارے دوسرے ساتھی آنند شرما جی بولیں گے، لیکن کیا ہوا؟ آپ اظہر مسعود کا کچھ کر نہیں پائے، چین نے آپ کو کرنے نہیں دیا۔ Membership of Nuclear Suppliers Group کے سمبندھ میں بھی آپ کچھ نہیں کر پائے، چین نے آپ کو کرنے ہی نہیں دیا۔ چین آپ کو کا ممبر بننے نہیں دیتا ہے، تو آپ کی کیا گُوٹ نیتی ہے، کون سی گُوٹ نیتی ہے؟

مہودے، میں آخر میں ٹریلر طلاق پر آنا چاہوں گا۔ مہامہم راشٹریتی جی کے ابھیہاشن میں ٹریلر طلاق کے بارے میں کہا گیا ہے۔ یہ مانا کہ بی جے پی کی سرکار نے پہلے اپوزیشن کی پالیٹیکل پارٹیوں کو بانٹا، ان کو ڈیوائیڈ کیا۔ کسی کو ای ڈی سے ڈرا کر، کسی کو انکم ٹیکس سے ڈرا کر، کسی کو این آئی اے سے ڈرا کر بانٹا، کیوں کہ آج راجنیتی زیادہ ہورہی ہے، آج ڈراؤ والی راجنیتی سب سے زیادہ

ہورہی ہے۔ فکس کرنے والی راجنیتی زیادہ ہورہی ہے۔ ہم نے یہ راجنیتی کبھی نہیں دیکھی۔ ہمارے وقت میں، جب ہم راجنیتی میں چھوٹے ہی تھے، تب کہتے تھے کہ یہ بی جے پی کا فائننسر ہے، اس کو مت چھیڑنا۔ آج تو ڈھونڈ کر کہتا کہ تم کہو کہ تم کانگریس کے ہو، تم سماج وادی کے ہو، تم بی ایس پی کے ہو، تم ممتا کے ہو، تم اس کے سمرتھک ہو، تاکہ تم کو اندر ڈالیں گے۔ کہنے کا مطلب یہ ہے کہ بات بھی نہیں کرنی ہے۔ مانیئے پردھان منتری جی، آپ سمجھ نہیں سکتے، اتنا ڈر، اتنا بھئے، اتنا خوف بے دیش میں۔ سٹا میں رہ کر یہ چیزیں نہیں دکھتی ہیں۔ یہ بھئے ٹھیک نہیں ہے۔ اگر افسر کام نہ کرے، تو اس کو بھئے ہو، یہ بہت اچھی بات ہے۔ اگر کوئی کرپشن کرتے ہوئے پکڑا جائے، تو اس کے لیے ایسا ہو۔ ہم نے بھی اس کے لیے سخت قانون بنایا، شاید دنیا کا پہلا قانون ہم نے جموں و کشمیر میں بنایا کہ اس کی پراپرٹی اٹیچ کیا جائے۔ اس سے ڈر ہے لہیکن یہ کہ کسی اپوزیشن والے کے گھر جاؤں، اس سے بات کروں، اس سے ٹیلی فون پر بات کروں۔۔۔ تو میں کوئی بزنیس نہیں کر سکتا، تجارت نہیں کر سکتا، انسٹی ٹیوشن نہیں چلا سکتا، مانیئے پردھان منتری جی، یہ بھئے دیش کے لیے ٹھیک نہیں ہے۔ دیش کے لوک تنتر کے لیے

ٹھیک نہیں ہے۔ Freedom of speech, freedom of socializing, freedom of

business, یہ سب تو ہونے چاہیئے۔ آج ہم سے فون پر کوئی بات نہیں کرتا، کیوں کہ

وہ فون ٹیپ ہو جائے گا۔ ہم نے تو کبھی نہیں یہ کیا۔ ہم نے کوئی ٹیپ نہیں کیا۔ ہم نے یہ سنا بھی نہیں کہ کسی کا فون ٹیپ کیا جائے۔ آج تک تو ہم نے یہ سنا تھا کہ کسی آتک وادیوں کا فون ٹیپ ہوتا ہے۔ جب میں پہلی بار چیف منسٹر بنا، تو ہم نے آتک وادیوں کے فون ٹیپ کرتے تھے، لیکن لیڈروں کے فون ٹیپ نہیں ہوتے تھے۔ کشمیر جیسے سینسیٹیو ایریا میں میں وہاں تین سال رہا، اس درمیان کسی نے ہم سے یہ پوچھنے کی جرات نہیں کی کہ ہم کسی لیڈر کا فون ٹیپ کریں یا کرنا چاہتے ہیں، چاہے وہ وپکش کا لیڈر ہو یا کوئی اور ہو یا اس کے لنکس کچھ بھی ہوں، ایکسیپٹ فار ٹیررزم۔ آج تو آپ نے ہمیں ٹیررسٹ بنا دیا، انٹرنیشنل ٹیررسٹ بنا دیا۔ آپ نے اپوزیشن کو ہی ٹیررسٹ بنا دیا۔ اس طرح کے بھئے، ڈر اور خوف کی بدولت جیتنا ہوا، تو یہ کیا جیتنا ہوا؟

میں نے گجرات میں ہی دیکھا، میں نے اپنے بھاشن کی زیادہ پبلسٹی نہیں لی، لیکن مجھے لوگوں نے کہا کہ یہاں کہا جاتا ہے کہ ایک ہزار لوگ یہاں ہیں، ان میں سے سات سو ہمارے ہیں یعنی بی جے پی کے ہیں اور اگر سات سو سے اوپر ووٹ آگئے، تو آپ نے ووٹ دیا اور اگر سات سو ہی رہے، تو اس کا مطلب ہے کہ صرف بی جے پی والے نے ووٹ دیا ہے، آپ نے نہیں دیا ہے، اس لیے تمہاری خیر نہیں۔

یہ کون سا ووٹ مانگنے کا، ووٹ garner کرنے کا طریقہ ہے کہ آپ ڈرا کر، دھمکا کر ووٹ لے لو۔ ڈرا دھمکا کر تو ہم بھی ہندستان میں ستر سال یا اس سے آگے، دو سو سال تک حکومت کر سکتے تھے۔ میں آپ سے وِنتی کرتا ہوں کہ ایسی راجنیتی مت کرئیے --- (مداخلت)--- اس پر آپ بہت روٹیا سینک چکے ہیں، دس دفعہ کہہ چکے ہیں --- (مداخلت)--- ایسی چیزوں کی وجہ سے ہی آپ کی پہچان ہوئی، ورنہ آپ کو پہچانتا ہی کون تھا؟ --- (مداخلت)---

مہودے، ٹریل طلاق کا ہم سمرتھن کرتے ہیں، لیکن ٹریل طلاق کے دو بھاگ ہیں۔ لا منسٹر صاحب کو میں نے سمجھایا تھا کہ ٹریل طلاق کے دو بھاگ ہیں۔ ایک اچھی بھاؤنا سے طلاق اور دوسرا کمیونٹی کو صاف کرنے کی بھاؤنا سے طلاق۔ اچھی بھاؤنا ہے۔ انسٹینٹ ٹریل طلاق 'طلاق طلاق طلاق' چاہے آپ طلاق بدعت ٹیلی فون پر کریں، ایس ایم ایس سے کریں یا زبانی کریں۔ اس کے ہم خلاف ہیں، لیکن اس کا دوسرا پارٹ بہت خطرناک ہے۔ جو آپ الیگلی کرتے ہو، اسے لیگل بنا کر کرنا چاہتے ہو۔ وہ ہے کہ اسے آپ کریمینل ایکٹ میں لاکر پتی کو جیل میں ڈال دو۔ جب تک پتی واپس آئے، اس کی پتی کہاں رہیگی، اس کے بچے کہاں رہیں گے، وہ کھائیں گے کہاں سے، کہاں سے پائیں گے؟ پہلے آپ نے شیعہ سنی کو بانٹا اور اب پتی پتی کو بانٹ رہے ہیں۔ کسی کو تو چھوڑ دیجیئے، کوئی گھر تو آپ چھوڑ دیجیئے۔ پہلے پالرازیشن کر کے مجھے اور آندد شرما جی کو بانٹ دیا۔ --- (مداخلت)---

میں یہاں دھرم کی بات کرتا ہوں۔ پھر مجھے اور اگروال جی کو بانٹ دیا۔ مجھے اپنے آپ کو ہی بانٹ دیا، پالرائزیشن کے ذریعہ دو دھرموں کا بٹوارہ۔ کاسٹیزم تو پہلے سے ہی تھا، لیکن دو دھرموں کا بٹوارہ اس سرکار میں ہوا۔ پھر شیعہ سنی کا بٹوارہ کیا اور کہا کہ شعیہ ہمارے اور سنی دوسری پارٹیوں کے۔ اب سنیوں میں بھی جو مرد اور عورت تھے، ان کا بھی بٹوارہ کر دیا۔ مرد کو جیل میں ڈالو اور عورت سے کہہ دیا کہ تمہاری سمسیا کا ہم نے سمدھان کر دیا۔۔۔ (مداخلت)۔۔ یہ کون سا

بٹوارہ ہے؟ کیوں آپ توڑ رہے ہیں؟ یہ مائٹرائٹی کمیونٹی پہلے ہی ٹوٹی ہے، غریب ہے، ان میں ڈر ہے، بھٹے ہے۔ لنچنگ سے ڈری ہوئی ہے، ٹرین میں ڈرتی ہے، کار میں گھومنے سے ڈرتی ہے۔ اگر کسی بینک میں ایپلی کیشن دیتے تو بینک لون اس ملتا نہیں۔ پتی کے ساتھ رہ رہی ہے، اسے بھی آپ نہیں رہنے دیں گے، پتی کو جیل میں ڈالکر، تم ہمیں ووٹ دے دو۔ خدا کے لیے کوئی گھر تو چھوڑو، کہیں تو معافی دے دو۔ اس طرح کا ٹریپل طلاق لاکر آپ دیش کو بانٹنے کا کام نہ کریں۔ ہمیں اپنا بھارت لوٹا دو۔ جو نیا بھارت آپ نے آج بنایا ہے، ہمیں وہ نیا بھارت نہیں چاہیئے۔ ہمیں اولڈ بھارت چاہیئے، ہمیں گاندھی کا بھارت چاہیئے، جہاں ہندو، مسلمان، سکھ اور عیسائی، ویسے سکھ اور عیسائی میں تو کوئی وواد نہیں ہے، لیکن جہاں ہندو اور مسلمان ایک دوسرے کے لیے خون دیتے تھے، وہ پرانا بھارت تھا، جسے آپ نے ووٹ کے لیے، سرکار کے لیے پالرائز کر دیا اور برابر نرنتر کرتے جا رہے ہیں، وہ بھارت ہمیں لوٹا دو۔ ہمیں وہ بھارت لوٹا دو، جس میں ڈر نہیں ہو، بانٹ نہیں ہو۔ ہمیں وہ بھارت لوٹا دو جس میں دو مہینے تین مہینے یا چار مہینے کی بچی کے ساتھ بلاتکار نہ ہوتا ہو۔ اس بھارت کی ہمیں ضرورت ہے۔ انہیں شبدون کے ساتھ، مانیئے اُپ سبھاپتی صاحب، میں آپ کا دھنیواد کرتا ہوں اور مہامہم راشٹری جی کے ابھی

بھاشن پر جو یہاں دھنیواد پرستاؤ مانئیے امت شاہ جی نے رکھا ہے، اس کا سمرتھن کرتا ہوں، جے ہند۔

(ختم شد)

(

20/DS پر آگے)

DS-SKC/4.55/20

श्री नरेश अग्रवाल (उत्तर प्रदेश) : माननीय उपसभापति जी, दो योग्य वक्ताओं ने अपनी बात को बड़ी काबिलियत के साथ रखा। मैं सोच रहा हूँ कि मैं ...(व्यवधान)... तीन? अच्छा, चलिए सहस्रबुद्धे जी को भी जोड़ लेते हैं। वैसे वे हमारी श्रेणी में हैं। हमने दो योग्य जोड़े हैं। मैं नहीं समझ पा रहा हूँ कि अपनी स्पीच कहाँ से शुरू करूँ, लेकिन मैं एक बात कहना चाहता हूँ कि दो महत्वपूर्ण दस्तावेज़, जो इस साल के सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेज़ हैं, उनमें से एक महामहिम राष्ट्रपति जी का अभिभाषण और दूसरा केन्द्रीय बजट, ये दोनों दस्तावेज़ देश के सामने आए। मैं यह करीब-करीब चुनावी वर्ष में समझ रहा हूँ, क्योंकि सात राज्यों के चुनाव होने वाले हैं। भाजपा जानती है कि उन चुनावों को अगर वह अकेले लड़ ले, तो शायद वह नहीं लड़ पाएगी। मुझे लग रहा है कि इन सात राज्यों के चुनावों के साथ पार्लियामेंट के चुनाव भी होंगे। मैंने सोचा था कि बजट में कुछ छूट मिलेगी, महामहिम राष्ट्रपति जी अपने अभिभाषण में कुछ बातों को कहेंगे। राष्ट्रपति जी हमारे उत्तर प्रदेश के हैं, पहली बार राष्ट्रपति हुए। हम उत्तर प्रदेश के लोग वैसे भी बोलने में राजनैतिक लोग होते हैं और कहने में कहीं संकोच नहीं करते हैं, लेकिन बड़ी निराशा हुई। हमने यह सोचा ही नहीं था कि आज देश को बीच समुद्र में खड़ा कर दिया जाएगा। हमने यह सोचा ही नहीं था कि देश के सामने यह स्थिति खड़ी होगी। बजट बड़ा जोर-शोर से पेश किया गया, किसी वर्ग को कुछ नहीं मिला। एकदम छला हुआ! मैं सरकार से इतना और कहना चाहूँगा कि आज अगर सबसे ज्यादा किसी को बदनाम किया जा रहा है, तो हम राजनैतिक व्यक्तियों को बदनाम किया जा रहा है।

हमारा चीर-हरण हो रहा है। मीडिया हमारा चीर-हरण कर रही है। जनता के बीच हमारी छवि बड़ी खराब बनाई जा रही है और रही-सही कसर सरकार -- श्रीमन्, ऐसा लगता है कि सिर्फ अपोजिशन के लोग भ्रष्ट हैं। सीबीआई, ईडी या और भी जो कार्रवाई कर रही हैं, वे सिर्फ विरोधी लोगों पर कर रही हैं और मेरे ख्याल से सबसे ईमानदार लोग सत्ता पक्ष के हैं। ...(व्यवधान)... वे दूध के धुले हैं। कल आपके ही राज्य में एक ऐसे व्यक्ति को मुख्य मंत्री घोषित किया गया, जो घनघोर भ्रष्टाचार में हटाए गए।

...(व्यवधान)...मैंने कहा न, घनघोर भ्रष्टाचार में वे हटाए गए, लेकिन चूंकि वे बीजेपी में हैं, इसलिए वे ईमानदार हो गए। ये चीजें बन्द कर देनी चाहिए। आईएस-आईएस के खिलाफ कभी कार्रवाई नहीं करता, जज-जज के खिलाफ कभी कार्रवाई नहीं करता। मुझे याद है कि सुप्रीम कोर्ट के दो जजों पर महिलाओं ने आरोप लगाए थे, लेकिन कुछ नहीं हुआ, सब बन्द हो गया। अगर किसी नेता पर आरोप लग गया होता, तो केस में नेता को ऑटोमैटिक बुला लिया गया होता। यह मानकर चलिए कि नेता का चुनाव लड़ना, उसके सामने कुछ मजबूरी होती है। अगर वह थोड़ा भ्रष्ट भी होगा, तो चुनाव में खर्च तो कर देगा। जब वह चुनाव लड़ेगा, तो उसमें खर्च भी होगा, बिना पैसे के कौन चुनाव लड़ेगा? रवि भाई, आप बिना पैसे के बिहार में चुनाव लड़ लीजिए। वहाँ जब आपका लालू जी से मुकाबला होगा, तो वहाँ के आपके जो मुख्य मंत्री हैं, उनका अता-पता भी नहीं मिल पाएगा, जो बिहार की हालत है। तब पता लगेगा कि चुनाव में किस तरीके से पैसा खर्च होता है। यह तो अच्छा है कि हम उत्तर भारत के लोग इनके साउथ से, हमारे अनंत कुमार जी के यहाँ से बचे हुए हैं। अभी साउथ के एक राज्य में

एमएलए का चुनाव हुआ। हमने उनकी पार्टी के लीडर से पूछा कि कितना खर्च हुआ? वे कहने लगे- 80 करोड़ रुपये। आप कहिए, तो मैं उनका नाम भी ले सकता हूँ। मैंने कहा- 80 करोड़? वे कहने लगे- प्रति वोट 2,700 रुपये दिया है। हमने पूछा- कैंडिडेट ने कैसे bear कर लिया? इस पर वे कहने लगे- वह हमारे यहाँ पार्टी और सरकार bear करती है।

(2पी/एमसीएम पर जारी)